CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2007 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 100

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 20 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 7, 9, 19 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष —
दुर्बल वह —
छिनती संतान जब,
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आँसू बहाती है।
किंतु क्या ?
योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं,
गीता है, गीता है। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और कविता का परिचय, प्रसंग, पंक्तियों का आशय तथा काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- इस अंश में मेषमाता की विवशता के माध्यम से दुर्बलता का परिणाम दिखाकर आत्मबल और कर्मशीलता की प्रेरणा दी गई है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'जागो फिर एक बार' से ली गई हैं। इस कविता में कवि भारतवासियों को उनकी शक्ति और गौरव का स्मरण कराकर पराधीनता तथा निष्क्रियता से जागने का आह्वान करता है। इस प्रसंग में वह दुर्बल भेड़ की विवशता दिखाकर समझाता है कि अन्याय के सामने असहाय होकर रोते रहने से अपने अधिकारों की रक्षा नहीं होती।

चरण 2: मेषमाता की विवशता का अर्थ मेषमाता अर्थात् भेड़ की माँ इतनी दुर्बल होती है कि उसकी संतान छीन लिए जाने पर भी वह उसका प्रतिरोध नहीं कर पाती। वह निर्निमेष, अर्थात् बिना पलक झपकाए, उस दुखद दृश्य को देखती रहती है। अपनी संतान की रक्षा न कर पाने की असमर्थता उसे भीतर तक पीड़ा पहुँचाती है। वह अपने दुर्बल जन्म को अभिशाप मानकर दुःख और विवशता से भरे गर्म आँसू बहाती है। यह चित्र केवल पशु की ममता का वर्णन नहीं है; इसके माध्यम से कवि अपनी रक्षा करने का साहस खो चुके मनुष्य की दशा भी सामने रखता है।

चरण 3: कर्म और आत्मबल का संदेश इसके बाद कवि पूछता है कि केवल शोक करने से क्या लाभ है। जीवन में वही टिकता और अपने अधिकारों की रक्षा करता है जो सक्षम, सजग और कर्मशील है। 'योग्य जन जीता है' को कवि केवल पश्चिम से आया विचार नहीं मानता; वह इसे गीता के कर्म, कर्तव्य और साहस के संदेश से जोड़ता है। आशय यह है कि भारतीयों की अपनी सांस्कृतिक परंपरा भी संकट के सामने निष्क्रिय पड़े रहने की शिक्षा नहीं देती। इसलिए उन्हें अपने सामर्थ्य को पहचानना और अन्याय के प्रतिकार के लिए सक्रिय होना चाहिए। यहाँ गीता का उल्लेख प्रेरणा के आधार के रूप में है।

चरण 4: काव्यगत विशेषताएँ मेषमाता दुर्बलता और असहायता का प्रतीक है। उसकी छिनती संतान तथा आँसुओं का दृश्य करुणा जगाता है, जबकि आगे का कथन जागरण और उत्साह उत्पन्न करता है। 'गीता है, गीता है' की पुनरावृत्ति विचार को दृढ़ता देती है और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का उदाहरण है। 'जन जीता' में 'ज' ध्वनि की आवृत्ति अनुप्रास पैदा करती है। छोटी पंक्तियाँ, प्रश्नात्मक शैली और तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली कथन को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि का संदेश है कि दुर्बलता पर आँसू बहाने के स्थान पर अपने आत्मबल को जगाकर कर्म करना चाहिए। मेषमाता की विवशता और गीता का स्मरण मिलकर पराधीन भारतीयों को साहस, सक्रियता और अधिकारों की रक्षा की प्रेरणा देते हैं।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में 'मेषमाता' को दुर्बलता से और 'गीता' को कर्म तथा कर्तव्य से जोड़ें; केवल पंक्तियों का शब्दार्थ लिखकर न रुकें।

अथवा

1. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (अथवा)

वायु तुम्हारी उज्ज्वल गाथा
सूर्य तुम्हारा रथ है,
बीहड़ काँटों भरा कीचमय
एक तुम्हारा पथ है।
यह शासन, यह कला, तपस्या
तुझे कभी मत भूलें।
ये अनाज की पूलें
तेरे काँधे झूलें !

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसान के श्रम, संघर्ष और समाज के प्रति उसके योगदान की प्रतिष्ठा की गई है। सप्रसंग व्याख्या में प्राकृतिक बिंबों का भावार्थ भी स्पष्ट करना आवश्यक है।
- 'पूलें' अनाज की फसल के गट्ठर हैं। वे किसान के श्रमफल और समाज के जीवनाधार का संकेत देती हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत काव्यांश माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'ये अनाज की पूलें तेरे काँधे झूलें' से लिया गया है। कवि ने इस कविता में किसान को सबका अन्नदाता और समाज का निर्माता मानकर उसके श्रम की महिमा गाई है। इन पंक्तियों में किसान के कठिन जीवन का चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि चाहता है कि शासन, कला और साधना से जुड़े लोग उसके योगदान को कभी न भूलें।

चरण 2: प्रकृति के माध्यम से किसान की महिमा किसान को संबोधित करते हुए कवि कहता है कि वायु मानो उसकी उज्ज्वल यशोगाथा को चारों दिशाओं में फैलाती है। 'सूर्य तुम्हारा रथ है' कहकर उसकी कर्मयात्रा को सूर्य जैसी निरंतरता, ऊर्जा और व्यापकता प्रदान की गई है। किसान प्रकृति के बीच रहकर श्रम करता है और उसके परिश्रम से धरती अन्न उपजाती है। इन प्राकृतिक बिंबों से साधारण समझे जाने वाले किसान का व्यक्तित्व गरिमामय बनता है। उसके श्रम का महत्त्व केवल उसके अपने घर तक सीमित नहीं, पूरे समाज तक फैला है।

चरण 3: कठिन श्रमपथ और समाज का दायित्व किसान का रास्ता बीहड़, काँटों से भरा और कीचड़युक्त है। इन शब्दों में खेतों में काम करने की वास्तविक कठिनाइयाँ भी हैं और उसके संघर्षपूर्ण जीवन का संकेत भी। वह सुविधाओं के बीच नहीं, बाधाओं और कष्टों को सहकर अन्न पैदा करता है। ऐसे अन्नदाता को शासन, कलाकार और तपस्या करने वाले कभी विस्मृत न करें। शासन की व्यवस्था, कला की सृजनशीलता और साधक की साधना भी जीवन के लिए अन्न पर निर्भर हैं। इसलिए किसान को सम्मान देना उसके उपकार के प्रति कृतज्ञता है। कवि समाज को उसके श्रम का मूल्य पहचानने के लिए प्रेरित करता है।

चरण 4: अंतिम पंक्तियों का आशय और काव्य-सौंदर्य किसान के कंधों पर झूलती अनाज की पूलें उसके परिश्रम की उपलब्धि हैं। कवि की कामना है कि उसका श्रम फलता रहे और वह अन्न से समाज का पोषण करता रहे। 'सूर्य तुम्हारा रथ है' में सूर्य पर रथ का आरोप होने से रूपक अलंकार है। वायु को किसान की उज्ज्वल गाथा कहना भी कल्पनापूर्ण रूपकात्मक अभिव्यक्ति है। 'बीहड़', 'काँटों' और 'कीचमय' से श्रम की कठिन परिस्थितियों का सजीव बिंब बनता है। 'भूलें' और 'झूलें' की तुक तथा संबोधन शैली कविता में लय और आत्मीयता लाती हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि किसान को समाज का पोषक मानता है। वह किसान के कठिन श्रम की प्रशंसा करते हुए शासन, कला और साधना के क्षेत्रों को उसके प्रति सम्मान तथा कृतज्ञता बनाए रखने का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: 'वायु' और 'सूर्य' से किसान की महिमा, 'काँटों' और 'कीच' से उसका संघर्ष तथा 'शासन, कला, तपस्या' से समाज का ऋण स्पष्ट करें।

2(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) क्या कहते हो ? किसी तरह भी
भूलूँ और भुलाने दूँ ?
गत जीवन को तरल मेघ-सा
स्मृति-नभ में मिट जाने दूँ ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य में भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य दोनों बताए जाते हैं। अलंकार की पहचान संबंधित शब्दों और उनके प्रभाव सहित होनी चाहिए।
- इस काव्यांश का केंद्रीय भाव प्रिय से जुड़े अतीत को स्मृति में सुरक्षित रखने का आग्रह है।

चरण 1: भाव-सौंदर्य सुभद्राकुमारी चौहान की कविता 'स्मृतियाँ' के इस अंश में वक्ता अपने प्रिय के साथ बीते जीवन को भूलने का प्रस्ताव स्वीकार नहीं करती। 'क्या कहते हो?' में विस्मय और हल्का उलाहना है। वह न स्वयं उन अनुभवों को भूलना चाहती है, न प्रिय को उन्हें भुलाने देना चाहती है। बीता हुआ जीवन उसके लिए ऐसी मूल्यवान भावनात्मक निधि है जिसे क्षणिक बादल की तरह मिट जाने देना संभव नहीं। प्रश्नों के रूप में व्यक्त यह अस्वीकार स्मृतियों के प्रति गहरे लगाव और प्रेम की दृढ़ता को मार्मिक बनाता है।

चरण 2: बिंब और अलंकार 'गत जीवन को तरल मेघ-सा' में गत जीवन की तुलना तरल मेघ से की गई है और 'सा' समानता-वाचक शब्द है; अतः यहाँ उपमा अलंकार है। जैसे बादल आकाश में घुलकर अदृश्य हो जाता है, वैसे ही अतीत के अनुभव विस्मृत हो सकते हैं; वक्ता इसी विस्मरण को रोकना चाहती है। 'स्मृति-नभ' में स्मृति पर आकाश का सीधा आरोप है, इसलिए रूपक अलंकार है। स्मृति का आकाश और उसमें विलीन होता मेघ मिलकर अमूर्त मनोभाव को दृश्य बिंब में बदल देते हैं।

चरण 3: भाषा और अभिव्यक्ति भाषा सरल, भावपूर्ण खड़ी बोली है। 'गत', 'तरल', 'मेघ' और 'नभ' जैसे शब्द कोमल तथा काव्यात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। प्रश्नात्मक शैली से संवाद और आत्मीयता आती है। 'भूलूँ' तथा 'भुलाने' की समान ध्वनियाँ और 'दूँ' की आवृत्ति पंक्तियों को लय देती हैं। संक्षिप्त कथन में प्रेम, स्मृति और विस्मरण के विरोध को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है।

चरण 4: निष्कर्ष अतीत की प्रिय स्मृतियों को बचाए रखने का भाव, उपमा तथा रूपक से निर्मित मेघ-आकाश का बिंब और आत्मीय प्रश्नात्मक शैली इस काव्यांश के सौंदर्य के प्रमुख आधार हैं।

त्वरित सुझाव: 'मेघ-सा' में तुलना देखकर उपमा और 'स्मृति-नभ' में सीधे आरोप से रूपक पहचानें; दोनों का संबंध विस्मरण के विरोध से भी स्पष्ट करें।

2(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(ख) पुहुप मध्य ज्यौं बास बसत है मुकुर माँहि जस छाँई।
तैसे ही हरि बसै निरंतर घट ही खोजो भाई।।
बाहर भीतर एकै जानौ यह गुरु ज्ञान बताई।
भन 'नानक' बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई।। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य में भाव-पक्ष और शिल्प-पक्ष दोनों स्पष्ट किए जाते हैं। यहाँ आत्मज्ञान, ईश्वर की सर्वव्यापकता और गुरु के मार्गदर्शन का महत्त्व है।
- फूल की सुगंध और दर्पण के प्रतिबिंब जैसे परिचित उदाहरण सूक्ष्म आध्यात्मिक विचार को सहज बनाते हैं।

चरण 1: भाव-सौंदर्य स्पष्ट करना गुरु नानक बताते हैं कि जैसे फूल में सुगंध तथा दर्पण में प्रतिबिंब रहता है, वैसे ही ईश्वर मनुष्य के हृदय में निरंतर विद्यमान है। इसलिए उसे बाहर भटककर खोजने के स्थान पर अपने अंतर्मन में पहचानना चाहिए। गुरु का ज्ञान भीतर और बाहर

एक ही परमात्मा की सत्ता का बोध कराता है। स्वयं को पहचाने बिना मन का भ्रम नहीं मिटता। इस प्रकार पद आत्मचिंतन, आत्मज्ञान और सर्वत्र ईश्वर को देखने की प्रेरणा देता है।

चरण 2: अलंकार और बिंबों का सौंदर्य बताना 'ज्यौं', 'जस' और 'तैसे' के द्वारा फूल-सुगंध तथा दर्पण-प्रतिबिंब की समानता ईश्वर के अंत:स्थित होने से जोड़ी गई है; इससे उपमा का सौंदर्य उत्पन्न होता है। 'भ्रम की काई' में भ्रम को काई का रूप देने से रूपक अलंकार है। काई जैसे स्वच्छता को ढक लेती है, वैसे ही भ्रम आत्मबोध को ढकता है। इन मूर्त बिंबों से गूढ़ आध्यात्मिक बात भी स्पष्ट और अनुभवगम्य बन जाती है।

चरण 3: भाषा और शैली की विशेषता पहचानना 'पुहुप', 'मुकुर', 'माँहि', 'हरि' और 'घट' जैसे शब्द संत-काव्य की लोकाभिमुख भाषा को व्यक्त करते हैं। 'भाई' संबोधन आत्मीयता लाता है। छाँई, भाई, बताई और काई की तुक पद को लयात्मक बनाती है। उपदेशात्मक कथन में सहजता और अपनापन होने से संदेश प्रभावपूर्ण हो उठा है।

चरण 4: निष्कर्ष आत्मज्ञान द्वारा भ्रम-निवारण का संदेश, परिचित उपमाएँ, 'भ्रम की काई' का रूपक तथा सरल, आत्मीय और लयात्मक भाषा इस पद का प्रमुख काव्य-सौंदर्य हैं।

त्वरित सुझाव: पहले आत्मज्ञान का भाव लिखें, फिर फूल-सुगंध की उपमा और 'भ्रम की काई' का रूपक उदाहरण सहित समझाएँ।

2(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(ग) एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ?
जड़ तो जड़ ही है;
जीवन में सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है; [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य बताते समय कथन का भाव, वक्ता का दृष्टिकोण तथा भाषा और अलंकारों का प्रभाव समझाना चाहिए।
- तने का बोलना मानवीकरण है। जड़ के प्रति उसकी उपेक्षा और गर्व के माध्यम से मानवीय अहंकार पर व्यंग्य किया गया है।

चरण 1: भाव-सौंदर्य और व्यंग्य समझाना तना जड़ को तुच्छ समझकर कहता है कि वह जीवन भर डरी हुई जमीन में मुँह छिपाए पड़ी रही। उसके अनुसार जड़ के जीवन में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं है। इस कथन से तने का अहंकार और संकीर्ण दृष्टि प्रकट होती है। वह उस जड़ का महत्त्व नहीं पहचानता जिस पर उसका अपना अस्तित्व निर्भर है। इस प्रकार कवि उन लोगों की मानसिकता पर व्यंग्य करते हैं जो दिखाई देने वाली अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते हुए उनके आधार बने मौन श्रम को भूल जाते हैं।

चरण 2: अलंकार और शब्दों की अर्थवत्ता पहचानना तने को मनुष्य की तरह बोलते और जड़ को डरकर मुँह गड़ाए पड़े हुए बताने में मानवीकरण है। 'जड़ तो जड़ ही है' में पहला 'जड़' वृक्ष के मूल के अर्थ में है, जबकि दूसरा उसके निष्क्रिय और चेतनाहीन होने का व्यंग्यार्थ देता है; एक शब्द की इस अर्थभिन्न आवृत्ति में यमक का सौंदर्य है। 'मुँह गड़ाए पड़ी रही' दृश्यात्मकता और उपेक्षा दोनों व्यक्त करता है।

चरण 3: भाषा और कथन-शैली का प्रभाव बताना बोलचाल की सरल खड़ी बोली तथा संवादात्मक शैली कथन को जीवंत बनाती है। अकेला प्रश्न 'जड़?' तने के उपहास और अवज्ञा को उभारता है। छोटी-बड़ी पंक्तियों वाला मुक्तछंद बातचीत की स्वाभाविक लय देता है। 'रही है' की आवृत्ति तने के आरोप को बल देती है और कथन की व्यंग्यात्मक धार बढ़ाती है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत अंश का सौंदर्य जड़ के प्रति तने की अहंकारपूर्ण उपेक्षा पर व्यंग्य, मानवीकरण, अर्थपूर्ण शब्द-आवृत्ति और सहज संवादात्मक मुक्तछंद में है।

त्वरित सुझाव: तने के कथन को कवि का समर्थन न मानें; जड़ की उपेक्षा में छिपे अहंकार और उस पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट करें।

3(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(क) केदारनाथ अग्रवाल की कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि नारी 'वीरांगना' कब बन जाती है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केदारनाथ अग्रवाल की 'वीरांगना' नारी की दृढ़ता, संघर्षशीलता और कर्मशीलता को व्यक्त करती है।
- लोहे के तपने, गलने और ढलने की प्रक्रिया कठिनाइयों से व्यक्तित्व के मजबूत बनने का बिंब है।

चरण 1: संघर्ष में निखरते व्यक्तित्व को समझना नारी तब वीरांगना बनती है जब वह जीवन के कष्टों और बाधाओं से हारने के बजाय उनका साहसपूर्वक सामना करती है। कविता में उसे लोहे की तरह तपते, गलते और ढलते देखा गया है। जैसे लोहा इन प्रक्रियाओं से उपयोगी और सुदृढ़ रूप प्राप्त करता है, वैसे ही संघर्ष नारी की सहनशक्ति और संकल्प को निखारते हैं।

चरण 2: साहस को सक्रिय कर्म से जोड़ना केवल कष्ट सह लेना ही वीरता नहीं है। कविता का गोली की तरह चलने का बिंब उसकी तीव्र गतिशीलता, निर्भीकता और लक्ष्य की ओर बढ़ने की शक्ति व्यक्त करता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वह जड़ या असहाय नहीं रहती, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कर्म करती है। यही सक्रिय संघर्ष उसे वीरांगना का रूप देता है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी जब कठिनाइयों में लोहे की तरह तपकर दृढ़ बनती है और निर्भीक होकर संकल्पपूर्वक आगे बढ़ती है, तब वह 'वीरांगना' बन जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लोहे का बिंब संघर्ष-सहन से और गोली का बिंब निर्भीक, सक्रिय गति से जोड़ें।

3(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(ख) 'मैं और मेरा पिट्ठू' कविता में चित्रित जीवन की विडंबनाओं का उल्लेख अपने शब्दों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में 'मैं' आजीविका से बँधा साधारण लिपिक है और 'पिट्ठू' उसका स्वप्नशील, प्रतिभाशाली सर्जक रूप है।
- विडंबना उसके वास्तविक जीवन की विवशताओं और भीतर की स्वतंत्र, सम्मानित जीवन जीने की आकांक्षा के विरोध से बनती है।

चरण 1: यथार्थ और आकांक्षा का विरोध बताना लिपिक दफ्तर में अधिकारी के संकेतों पर चलता है, जबकि उसका कल्पनाशील रूप स्वच्छंद आनंद में डूबा है। उसकी दफ्तरी लिखावट बार-बार सुधरवाई जाती है, पर उसके भीतर का रचनाकार प्रसिद्धि पाता है। घर लौटने की भीड़भरी यात्रा के कष्ट और सुंदर वातावरण में घूमने की कल्पना भी उसके जीवन के विरोध को उभारते हैं।

चरण 2: पारिवारिक और आर्थिक विवशता समझाना बच्चे की चिकित्सा के लिए प्रतीक्षा करता व्यक्ति अपने भीतर के कवि को सम्मानित होते देखता है। वह सर्जनात्मक आकांक्षा मिटा नहीं सकता, किंतु पूरी तरह उसे अपना जीवन सौंपना चाहता है तो नौकरी और वेतन-वृद्धि की चिंता आ जाती है। इस प्रकार रोटी, परिवार और नौकरी की आवश्यकताओं के बीच उसकी प्रतिभा को मनचाहा अवसर नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष कविता की विडंबना है कि व्यक्ति प्रतिभाशाली और स्वतंत्र होना चाहता है, पर आजीविका की विवशताएँ उसे साधारण लिपिक के बँधे हुए जीवन में रखती हैं। उसके भीतर यथार्थ और आकांक्षा का द्वंद्व चलता रहता है।

त्वरित सुझाव: 'मैं' और 'पिट्ठू' को दो बाहरी व्यक्ति न बताएँ; एक ही व्यक्ति के विवश जीवन और सर्जक मन का विरोध लिखें।

3(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(ग) 'आदमी का अनुपात' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गिरिजा कुमार माथुर की कविता 'आदमी का अनुपात' विराट सृष्टि के सामने मनुष्य के छोटे अस्तित्व और बड़े अहंकार का विरोध दिखाती है।
- कविता का संदेश परस्पर समानता, सह-अस्तित्व और संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठने से संबंधित है।

चरण 1: विराट सृष्टि और मनुष्य का अनुपात समझना कविता मनुष्य के आसपास के सीमित स्थान से आगे बढ़कर पृथ्वी, नक्षत्रों और असंख्य ब्रह्मांडों की विशालता का बोध कराती है। इस विस्तार के सामने एक व्यक्ति का अस्तित्व अत्यंत छोटा है। उसे यह अनुपात समझकर अपनी सीमाओं का ज्ञान होना चाहिए और स्वयं को सबसे बड़ा मानने का अभिमान छोड़ना चाहिए।

चरण 2: अहंकार और विभाजन के परिणाम बताना इतना छोटा होते हुए भी मनुष्य अपने अहंकार, ईर्ष्या और स्वार्थ से दूसरों से दूरी बनाता है तथा उन पर अधिकार जमाना चाहता है। दो व्यक्तियों के एक कमरे में रहते हुए भी अलग-अलग दुनियाएँ बना लेने का चित्र मानसिक विभाजन को प्रकट करता है। कवि इस संकीर्णता से ऊपर उठकर एक-दूसरे को समान समझने और मिलकर रहने की प्रेरणा देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि मनुष्य सृष्टि में अपनी सीमित स्थिति पहचानकर अहंकार, ईर्ष्या और दूसरों पर प्रभुत्व की भावना छोड़े तथा प्रेम, समानता और सहयोग के साथ जीए।

त्वरित सुझाव: संदेश लिखते समय सृष्टि की विशालता से मानव की लघुता और फिर अहंकार त्यागकर साथ रहने की सीख तक जाएँ।

4(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भाषा की दीवार के टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक-दूसरे के बहुत क़रीब आ जाते हैं। असल में, भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आज़ादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी और आज उनकी पार्लियामेंट और शासन-विधान भी एक है।

(क) 'भाषा की दीवार' कथन का क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त रूपक का अर्थ उसके प्रसंग से समझना चाहिए; यहाँ दीवार किसी वास्तविक निर्माण का नाम नहीं है।
- भाषा विचारों और भावों के आदान-प्रदान का साधन है; परस्पर भाषा न समझना संवाद में बाधा बन सकता है।

चरण 1: कथन का प्रसंग पहचानिए लेखक उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय के संबंध की चर्चा करता है। दोनों की भाषाएँ अलग होने के कारण एक व्यक्ति दूसरे की बात सहज रूप से नहीं समझ पाता। इसी कारण उनके बीच निकटता स्थापित होने में रुकावट आती है। भाषा का यह अंतर उन्हें अलग दिखाई देता है, यद्यपि गद्यांश उनके मूल संबंधों को समान बताता है।

चरण 2: दीवार का लाक्षणिक अर्थ समझिए जैसे दीवार दो व्यक्तियों को एक-दूसरे से अलग करती है, वैसे ही एक-दूसरे की भाषा का ज्ञान न होना उनके संवाद को रोकता है। इस कथन में दीवार का आशय इसी संप्रेषण संबंधी बाधा से है। इसका हटना परस्पर भाषा और भाव समझ पाने का संकेत है, जिससे पहले से विद्यमान आत्मीयता प्रकट हो जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष 'भाषा की दीवार' का तात्पर्य अलग-अलग भाषाओं के कारण एक-दूसरे की बात और भाव न समझ पाने की बाधा से है। यह बाधा उत्तर और दक्षिण भारत के लोगों में दूरी का आभास उत्पन्न करती है।

त्वरित सुझाव: 'दीवार' का अर्थ लिखते समय भौतिक दीवार न बताइए; भाषा न समझने की बाधा और उससे उत्पन्न दूरी को जोड़िए।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भाषा की दीवार के टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक-दूसरे के बहुत क़रीब आ जाते हैं। असल में, भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आज़ादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी और आज उनकी पार्लियामेंट और शासन-विधान भी एक है।

(ख) भाषा की दीवार टूटने से एकता कैसे दिखाई पड़ती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के अनुसार भाषायी भिन्नता बाहरी दूरी पैदा करती है, पर उत्तर और दक्षिण के लोगों का मूल संबंध एकता का है।
- कारण और परिणाम वाले प्रश्न में बाधा हटने के बाद होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: संवाद की बाधा हटने का प्रभाव समझिए जब उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय एक-दूसरे की भाषा समझने लगते हैं, तब वे अपने विचार और भाव आसानी से व्यक्त कर पाते हैं। अपरिचय के कारण पैदा हुई दूरी घटती है। गद्यांश के शब्दों में वे 'एक-दूसरे के बहुत क़रीब आ जाते हैं'। यह निकटता बताती है कि भाषायी भेद ने ही उनके बीच अलगाव का आभास पैदा किया था।

चरण 2: पहले से उपस्थित एकता को पहचानिए लेखक कहता है कि भाषा की दीवार के आर-पार रहते हुए भी दोनों एक हैं। उनकी सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता-संघर्ष और शासन-व्यवस्था के साझे संबंध भाषा समझ आने पर अधिक स्पष्ट होते हैं। इसलिए भाषा की बाधा टूटने से कोई नई एकता उत्पन्न नहीं होती; पहले से मौजूद आत्मीयता और समानता खुलकर दिखाई देने लगती है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा की दीवार टूटने पर उत्तर और दक्षिण भारत के लोग एक-दूसरे के विचार तथा भाव समझकर निकट आते हैं। तब भाषायी भेद गौण हो जाता है और उनकी साझा संस्कृति, इतिहास तथा राष्ट्रीय जीवन पर आधारित एकता स्पष्ट दिखाई देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में क्रम रखिए: भाषा की समझ, परस्पर निकटता और अंत में पहले से विद्यमान एकता की पहचान।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भाषा की दीवार के टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक-दूसरे के बहुत क़रीब आ जाते हैं। असल में, भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आज़ादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी और आज उनकी पार्लियामेंट और शासन-विधान भी एक है।

(ग) उत्तर और दक्षिण भारत की एकता के और क्या-क्या आधार हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित उत्तर में एकता के वही आधार लेने चाहिए जिन्हें लेखक ने स्पष्ट रूप से बताया है।
- दिए गए आधार धार्मिक-सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संबंधों से जुड़े हैं; इन सभी का उल्लेख उत्तर को पूरा करता है।

चरण 1: धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पहचानिए गद्यांश में लेखक उत्तर और दक्षिण भारत के लोगों को 'एक धर्म के अनुयायी' तथा 'संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार' बताता है। यहाँ लेखक के कथन के अनुसार धार्मिक संबंध और साझा सांस्कृतिक विरासत एकता के आधार हैं। भाषा अलग होने पर भी इस विरासत में उनकी साझेदारी बनी रहती है।

चरण 2: ऐतिहासिक और राजनीतिक आधार बताइए दोनों क्षेत्रों के लोगों ने देश की आज़ादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी। यह साझा स्वतंत्रता-संघर्ष उनकी ऐतिहासिक एकता का प्रमाण है। स्वतंत्रता के बाद उनकी पार्लियामेंट अर्थात संसद और शासन-विधान भी एक हैं। इस प्रकार एक ही राष्ट्रीय शासन-व्यवस्था से उनका संबंध राजनीतिक एकता को व्यक्त करता है। उत्तर में इन आधारों को केवल भाषा की समानता तक सीमित नहीं करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के अनुसार उत्तर और दक्षिण भारत की एकता के आधार हैं: एक धर्म का अनुयायी होना, साझा सांस्कृतिक

विरासत, स्वतंत्रता के लिए मिलकर संघर्ष करना तथा एक ही संसद और शासन-विधान का होना।

त्वरित सुझाव: आधारों को याद रखने के लिए धर्म-संस्कृति, स्वतंत्रता-संघर्ष और संसद-शासन के क्रम में उत्तर तैयार कीजिए।

अथवा

4(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (अथवा)

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है - न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

(क) देह और आत्मा में क्या अंतर बताया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में देह और आत्मा के अंतर को नश्वरता तथा शाश्वतता के आधार पर समझाया गया है।
- शरीर की गतिशीलता और आत्मा की स्थिरता के माध्यम से व्यवहार में लचीलेपन तथा आदर्शों में दृढ़ता का संकेत मिलता है।

चरण 1: देह की विशेषता स्पष्ट कीजिए लेखक ने देह को 'नाशशील' कहा है। इसका अर्थ है कि शरीर सदा एक-सा बना नहीं रहता और अंततः नष्ट हो जाता है। जीवन की गतिविधियों के लिए उसका हिलना-झुकना आवश्यक है। यदि शरीर में गति और लचीलापन न रहे, तो वह अपने सामान्य कार्य नहीं कर सकेगा। इसलिए देह के संदर्भ में परिवर्तन और सक्रियता पर बल दिया गया है।

चरण 2: आत्मा की विशेषता से तुलना कीजिए आत्मा को गद्यांश में 'शाश्वत' बताया गया है, अर्थात वह सदा रहने वाली है। लेखक के अनुसार उसे देह की तरह निरंतर हिलने-झुकने की आवश्यकता नहीं है। इस तुलना को आगे स्थिर आदर्शों और लचीले विचारों से जोड़ा गया है। उत्तर का आधार यही पाठगत अंतर है; यहाँ देह और आत्मा के विषय में कोई अतिरिक्त दार्शनिक मत प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के अनुसार देह नाशशील है, जबकि आत्मा शाश्वत है। देह को जीवन के कार्यों के लिए निरंतर हिलना-झुकना पड़ता है, पर आत्मा स्थिर रहती है और उसे इस प्रकार बदलने या झुकने की आवश्यकता नहीं होती।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय दोनों जोड़े साथ रखिए: देह नाशशील और गतिशील; आत्मा शाश्वत और स्थिर।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (अथवा)

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है - न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

(ख) कैसे लोगों की तुलना रावण से की गई है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा का आशय समझने के लिए व्यक्ति और उपमान के बीच बताई गई समान विशेषता पहचाननी चाहिए।
- यहाँ रामलीला का रावण बाँस की खपच्चियों से बना पुतला है; उसकी जड़ता की तुलना मनुष्य की अकड़ और अनम्यता से की गई है।

चरण 1: तुलना किए गए लोगों को पहचानिए लेखक ऐसे लोगों की ओर संकेत करता है जो अपने विचारों और व्यवहार में लचीलापन नहीं लाते। वे परिस्थितियों के बदलने पर भी उनके साथ समन्वय नहीं साधते और एक ही ढंग पर अड़े रहते हैं। जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को ढालने का अभाव उन्हें जड़ बना देता है। यहाँ आदर्शों पर दृढ़ रहने की आलोचना नहीं, बल्कि विचार और व्यवहार की अनावश्यक कठोरता की आलोचना है।

चरण 2: रावण के पुतले से समानता समझाइए रामलीला का रावण बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है; वह न स्वयं हिलता है और न झुकता है। इसी तरह हठी व्यक्ति भी परिस्थितियों के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन नहीं करते। दोनों में लचीलेपन और स्वाभाविक गतिशीलता का अभाव है। तुलना का कारण यही जड़ता है, रावण के किसी अन्य पौराणिक गुण या घटना का यहाँ संबंध नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष विचारों और व्यवहार में अकड़े रहने वाले, परिस्थितियों के साथ समन्वय न साधने वाले लोगों की तुलना रामलीला के रावण से की गई है। वे उसके पुतले की तरह लचीलेपन से रहित होते हैं और आवश्यकतानुसार स्वयं को बदल नहीं पाते।

त्वरित सुझाव: 'कैसे' के लिए हठी और अनम्य लोगों का उल्लेख कीजिए; 'क्यों' के लिए पुतले की न हिलने-झुकने वाली जड़ता बताइए।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (अथवा)

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है - न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

(ग) हमारा व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आदर्श व्यक्तित्व में स्थिर आदर्शों और लचीले विचारों के संतुलन को आवश्यक बताता है।
- पैरों के उदाहरण से जीवन के संघर्षों में डटे रहने और व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुसार झुकने की क्षमता समझाई गई है।

चरण 1: आदर्शों की दृढ़ता समझिए हमारे आदर्श स्थिर होने चाहिए ताकि कठिन परिस्थितियों में भी जीवन को सही दिशा मिलती रहे। लेखक जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की शक्ति चाहता है। इससे आशय संघर्षों का सामना करने वाले आत्मबल और अपने मूल जीवन-मूल्यों के प्रति निष्ठा से है। परिस्थितियों से तालमेल बैठाने के नाम पर अपने आदर्श छोड़ देना उचित व्यक्तित्व का लक्षण नहीं होगा।

चरण 2: विचारों और व्यवहार का लचीलापन जोड़िए विचार ऐसे हों कि बदलती परिस्थितियों के साथ समन्वय स्थापित कर सकें। लेखक पैरों की उपमा देता है: वे हमें खड़ा रखते हैं और मुड़कर उठने-बैठने-लेटने में सहायता भी करते हैं। इसी प्रकार व्यक्तित्व में आवश्यक दृढ़ता के साथ अनुकूलन की क्षमता भी होनी चाहिए। अनावश्यक अकड़ व्यक्ति को जड़ बनाती है, जबकि विवेकपूर्ण लचीलापन उसे सक्रिय रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष हमारा व्यक्तित्व आदर्शों में दृढ़ तथा विचारों और व्यवहार में लचीला होना चाहिए। हम जीवन के संघर्षों में डटे रहें, पर बदलती परिस्थितियों से समन्वय साधकर आवश्यकतानुसार स्वयं को ढालने की क्षमता भी रखें।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संतुलन स्पष्ट रखिए: आदर्श स्थिर हों, विचार लचीले हों; पैरों का उदाहरण इन दोनों गुणों को एक साथ समझाता है।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(क) 'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ', पाठ के आधार पर बताइए कि सहस्र धाराओं में फूटती नर्मदा लेखक को भारतीय संस्कृति का प्रतीक क्यों लगी। आज यही प्रतीक मैला-सा क्यों लगता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निर्मल वर्मा के निबंध में भारतीयता का आधार साझा सांस्कृतिक स्मृति, सहिष्णुता और विविध परंपराओं का सहअस्तित्व है।
- नर्मदा की अनेक धाराएँ एक ही नदी की अभिव्यक्तियाँ हैं; इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में विविधता और एकता साथ रहती हैं।

चरण 1: नर्मदा के प्रतीक का अर्थ लेखक ने नर्मदा को सहस्र धाराओं में फूटते देखा तो उसमें भारतीय संस्कृति का स्वरूप दिखाई दिया। जैसे एक नदी अनेक धाराओं में प्रकट होती है, वैसे ही हमारी संस्कृति अनेक भाषाओं, धर्मों, जातियों और परंपराओं में अभिव्यक्त होती है। हर छोटी परंपरा की अपनी पहचान है, फिर भी वह एक व्यापक सांस्कृतिक प्रवाह से जुड़ी है। किसी एक धारा को मिटाकर एकता पैदा करना इस संस्कृति का स्वभाव नहीं है।

चरण 2: प्रतीक के मलीन पड़ने का कारण स्वतंत्रता के बाद हमने इस समावेशी सांस्कृतिक प्रवाह की उपेक्षा की। भारत को केवल राजनीतिक राज्य मानने और अपनी सांस्कृतिक स्मृति से कटने के कारण आत्मीयता एवं सहिष्णुता कमजोर हुई। जिन सीमाओं ने कभी पीड़ित समुदायों को आश्रय दिया था, उनकी उदार भावना संकीर्णताओं में दबने लगी। इसीलिए लेखक को लगता है कि भारतीय संस्कृति की जीवनदायिनी धारा सूख रही है और उसका उजला प्रतीक मैला पड़ गया है। यहाँ मैलापन मुख्यतः सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष नर्मदा की बहुधारिता भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता का प्रतीक है। सांस्कृतिक जड़ों से अलगाव और उदार समन्वय की उपेक्षा ने आज इस प्रतीक को धुँधला किया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले अनेक धाराओं और अनेक परंपराओं का संबंध बताएँ, फिर सांस्कृतिक उपेक्षा का परिणाम लिखें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(ख) 'तत्सत्' कहानी में अंश और संपूर्ण के संबंध का स्पष्टीकरण किस प्रकार किया गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र की प्रतीकात्मक कहानी में वन संपूर्ण का तथा उसके पेड़-पौधे और जीव-जंतु अंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- अलग-अलग अस्तित्व का अहंकार समग्र सत्य को छिपाता है; व्यापक दृष्टि अंशों की परस्पर संबद्धता दिखाती है।

चरण 1: अलगाव की दृष्टि समझना वन के प्राणी अपने-अपने नाम और रूप को ही सत्य मानते हैं। उन्हें पेड़, पशु और झाड़ियाँ दिखाई देते हैं, पर वे इन सबसे अलग कोई वन खोजते हैं। इसलिए वे वन के अस्तित्व को नकार देते हैं। वे भूल जाते हैं कि वन कोई अतिरिक्त प्राणी नहीं, उन सबको समेटने वाला समग्र रूप है। यह उनकी खंडित दृष्टि है: जिस संपूर्ण के वे अंग हैं, उसी को वे अपने सीमित अनुभव के कारण पहचान नहीं पाते।

चरण 2: बड़ दादा के बोध से संबंध स्पष्ट करना शिकारी के समझाने और ऊपर से समग्र दृश्य देखने के प्रसंग में बड़ दादा को बोध होता है कि वन किसी एक वृक्ष या पशु का नाम नहीं, सबके संयुक्त अस्तित्व की वास्तविकता है। तब उनका भाव है कि वह सब जगह है और स्वतंत्र अहं के रूप में हम कुछ नहीं हैं। अंश संपूर्ण से पृथक नहीं है; उसका स्थान और अर्थ संपूर्ण के भीतर है। कहानी इस अनुभूति द्वारा व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर उठकर व्यापक सत्ता को स्वीकारने का संदेश देती है।

चरण 3: निष्कर्ष वन और वनवासियों के प्रतीक से स्पष्ट होता है कि अंश की सार्थकता संपूर्ण में है। केवल अपनी पृथक सत्ता को सब कुछ मानना अज्ञान है; सबके भीतर व्याप्त एकता को पहचानना सत्य का बोध है।

त्वरित सुझाव: पेड़-पशु को अंश और वन को संपूर्ण मानकर समझाएँ; बड़ दादा की अंतिम अनुभूति को उत्तर का आधार बनाएँ।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(ग) 'चित्र' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि साहित्य की तुलना मोर से किसने की और क्यों? आज के साहित्य के बारे में उसकी क्या धारणा है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शंकर पुणताम्बेकर के व्यंग्य में चित्रों के माध्यम से विचारों और सामाजिक भूमिकाओं का प्रतीकात्मक निरूपण होता है।
- मोर का नृत्य कलात्मक सुंदरता तथा उसका सर्प-विनाश बुराइयों के प्रतिरोध का प्रतीक है।

चरण 1: तुलना करने वाले व्यक्ति और कारण चित्र पाठ में अमेरिकी लेखक आर्थर मिलर ने साहित्य की तुलना मोर से की है। मोर अपने विविधरंगी पंख फैलाकर सुंदर नृत्य करता है और सर्प को भी समाप्त करता है। इसी प्रकार साहित्य में सौंदर्य, संवेदना और आनंद की सृष्टि करने की शक्ति होनी चाहिए, साथ ही उसे समाज की हानिकारक प्रवृत्तियों से संघर्ष भी करना चाहिए। कलात्मकता और सामाजिक दायित्व एक-दूसरे के पूरक हैं।

चरण 2: आज के साहित्य के विषय में धारणा चित्रकार कहता है कि आज का साहित्य यथार्थ दिखाने और बुराई का विरोध करने के नाम पर केवल डंडा नचाने लगा है। मिलर इस बात से सहमत हैं। उनके अनुसार केवल किसी वाद का प्रचार, चाहे वह जनता से जुड़ा हो, साहित्य नहीं बन जाता। उसमें यदि कलात्मक सौंदर्य और जीवन की ऊष्मा नहीं है तो वह रोग पहचानने वाला चिकित्सकीय चित्र भर रह जाता है। इसलिए सही साहित्य में केवल दोषों का उद्घाटन नहीं, रचनात्मक संवेदनशीलता भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष आर्थर मिलर के लिए साहित्य मोर की तरह सुंदरता रचने वाला और बुराइयों का प्रतिरोध करने वाला है। वे केवल विचारधारा के प्रचार तक सीमित साहित्य को अपूर्ण मानते हैं।

त्वरित सुझाव: नाम आर्थर मिलर अवश्य लिखें और मोर के नृत्य तथा सर्प-विनाश से साहित्य के दोनों दायित्व जोड़ें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(घ) 'नदी बहती रहे' पाठ में लेखक ने क्यों कहा है कि भारत की नदियाँ अब मोक्षदायिनी नहीं रहीं ? इस विषय पर अपने विचार भी लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नदियाँ हमारे आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन को पोषण देती हैं; उनकी पवित्रता का संबंध जीवनदायी जल से भी है।
- लेखक का कथन मानवीय उपेक्षा और प्रदूषण पर प्रश्न उठाता है तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व जगाता है।

चरण 1: मोक्षदायिनी न रहने का आशय नदी बहती रहे पाठ में लेखक ने नदियों की दुर्दशा की ओर ध्यान दिलाया है। जिन नदियों के निर्मल जल को पवित्र और जीवनदायी माना जाता था, उनमें नगरों का मल-जल, कूड़ा और उद्योगों के हानिकारक पदार्थ मिलने लगे हैं। उनका जल दूषित हो रहा है तथा प्राकृतिक प्रवाह और आसपास का पर्यावरण नष्ट हो रहा है। ऐसी नदियाँ मनुष्य को स्वस्थ जीवन देने के बजाय रोग और संकट का कारण बनती हैं। इसी विडंबना को लेखक ने मोक्षदायिनी न रहने के कथन से व्यक्त किया है।

चरण 2: अपने विचार और उपाय मेरे विचार से नदियों के प्रति श्रद्धा केवल पूजा करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उन्हें दूषित करने के बाद उनसे कल्याण की आशा रखना अनुचित है। हमें कूड़ा और अनुपचारित गंदा पानी नदियों में डालना रोकना चाहिए, औद्योगिक अपशिष्ट का शोधन करना चाहिए और तटों की वनस्पति की रक्षा करनी चाहिए। जल का विवेकपूर्ण उपयोग तथा प्राकृतिक प्रवाह का संरक्षण भी आवश्यक है। समाज और प्रशासन दोनों मिलकर काम करें तभी नदियों का जीवनदायी स्वरूप बच सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष नदियों का प्रदूषण और उपेक्षा उनके कल्याणकारी स्वरूप को नष्ट कर रहे हैं। उनकी सच्ची आराधना उन्हें स्वच्छ, प्रवाहमान और जीवन के अनुकूल बनाए रखना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो भाग रखें: पहले लेखक के कथन का कारण, फिर अपने विचारों के साथ नदी बचाने के ठोस उपाय।

6(क). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

(क) लेखक ने क्यों कहा कि पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर भारतीय संगीत में प्रजातंत्र पर्व के शुभारंभ के प्रतीक थे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संगीत का लोकतंत्रीकरण उसे सीमित आश्रयदाता वर्ग से निकालकर सामान्य लोगों की पहुँच में लाना है।
- पलुस्कर ने संगीत शिक्षा और सार्वजनिक प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय संगीत को सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाई।

चरण 1: पुरानी स्थिति और उसमें परिवर्तन भारतीय शास्त्रीय संगीत लंबे समय तक राजदरबारों, संपन्न आश्रयदाताओं और कुछ वंशपरंपरागत घरानों तक सीमित था। सामान्य व्यक्ति को व्यवस्थित संगीत शिक्षा सरलता से नहीं मिलती थी। विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने इस सीमित व्यवस्था से संगीत को बाहर निकालकर समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचाने का प्रयास किया।

चरण 2: प्रजातंत्र पर्व का आशय उन्होंने गांधर्व महाविद्यालय जैसी संस्था द्वारा इच्छुक विद्यार्थियों को संगीत सीखने का अवसर दिया तथा सार्वजनिक संगीत आयोजनों से जनता को शास्त्रीय संगीत से जोड़ा। इससे संगीत किसी वर्ग की निजी संपत्ति न रहकर साझा सांस्कृतिक धरोहर बनने लगा। कलाकार और कला को भी सम्मान मिला। लेखक ने इसी जनोन्मुख परिवर्तन के कारण उन्हें भारतीय संगीत में प्रजातंत्र पर्व के शुभारंभ का प्रतीक कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष पलुस्कर ने संगीत को दरबारी और सीमित दायरे से जनसाधारण तक पहुँचाया। संगीत शिक्षा और आस्वाद में व्यापक भागीदारी की शुरुआत ही यहाँ प्रजातंत्र पर्व है।

त्वरित सुझाव: प्रजातंत्र का अर्थ राजनीतिक शासन न लिखें; संगीत सीखने और सुनने में आम जनता की भागीदारी स्पष्ट करें।

6(ख). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

(ख) फ़ौजी के प्रति पुरुषोत्तमदास टंडन के व्यवहार से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-संबंधी प्रश्न में व्यक्ति के व्यवहार को घटना से जोड़कर उससे मिलने वाली प्रेरणा स्पष्ट करनी चाहिए।
- न्यायप्रियता का अर्थ है नियमों को सब पर समान रूप से लागू करना और दबाव में कर्तव्य से पीछे न हटना।

चरण 1: फ़ौजी अधिकारी के साथ व्यवहार का प्रसंग छावनी के फ़ौजी अधिकारी नगरपालिका का जलकर नहीं चुका रहे थे। टंडन जी ने कर जमा करने को कहा और भुगतान न होने पर पानी बंद करने का नोटिस दिया। अधिकारी के रोब और विरोध से वे विचलित नहीं हुए। उन्होंने शांत रहते हुए नियम के पालन पर दृढ़ता दिखाई।

चरण 2: व्यवहार से मिलने वाली शिक्षा इस प्रसंग से शिक्षा मिलती है कि शक्तिशाली व्यक्ति के दबाव में आकर अन्याय स्वीकार नहीं करना चाहिए। सार्वजनिक पद पर रहते हुए निर्भयता और निष्पक्षता से कर्तव्य निभाना चाहिए। साथ ही, दृढ़ता का अर्थ क्रोध या अभद्रता नहीं है; शांति और विनम्रता के साथ भी अनुचित दबाव का सामना किया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष टंडन जी का व्यवहार हमें निर्भय, न्यायप्रिय और कर्तव्यनिष्ठ बनने तथा विनम्र रहकर भी सिद्धांतों पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जलकर वाले प्रसंग के बाद उससे निकलने वाले दो गुण अवश्य लिखें; केवल घटना दोहराकर उत्तर समाप्त न करें।

6(ग). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

(ग) थाथवली गाँव की उस महिला का पहला नाम भुलाकर लोग उसे 'अरुमुगम की माँ' नाम से क्यों पुकारने लगे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नामकरण के कारण वाले प्रश्न में उस घटना को पहचानना आवश्यक है जिससे व्यक्ति की सामाजिक पहचान बदलती है।
- यहाँ माँ को पुत्र के नाम से पुकारना उसके त्यागमय संबंध के प्रति आदर प्रकट करता है।

चरण 1: पहचान बदलने का कारण पहले गाँव के लोग उस महिला को उसके अपने नाम से जानते थे। उसके पुत्र अरुमुगम ने देश की रक्षा करते हुए प्राणों का बलिदान दिया। उसकी वीरता के कारण लोगों के मन में उसके लिए अत्यंत सम्मान उत्पन्न हुआ और वे उसके देशप्रेम का गुणगान करने लगे।

चरण 2: नए संबोधन का अर्थ अरुमुगम की कीर्ति उसकी माँ के लिए भी गौरव का कारण बनी। इसलिए लोग उसे आदरपूर्वक 'अरुमुगम की माँ' कहने लगे। यह संबोधन उस वीर सपूत को जन्म देने वाली माँ के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता था। इस तरह पुत्र के बलिदान से जुड़ी सम्मानपूर्ण पहचान ने उसके पहले नाम का स्थान ले लिया।

चरण 3: निष्कर्ष अरुमुगम के देशरक्षा में बलिदान और उससे प्राप्त गौरव के कारण लोग उसकी माँ का पुराना नाम भूलकर उसे 'अरुमुगम की माँ' कहने लगे।

त्वरित सुझाव: कारण की पूरी कड़ी लिखें: पुत्र का बलिदान, उसकी वीरता का सम्मान और फिर माँ को मिला गौरवपूर्ण संबोधन।

6(घ). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

(घ) रवींद्रनाथ ठाकुर निवेदिता की सेवा को 'दिल की सेवा' क्यों कहते थे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'दिल की सेवा' का भावार्थ समझाने के लिए बाहरी सहायता के साथ उसके पीछे की करुणा और आत्मीयता को भी स्पष्ट करें।
- पाठ पर आधारित उत्तर में गुण का नाम लिखने के बाद उसका प्रमाण देने वाला सेवा-प्रसंग जोड़ना चाहिए।

चरण 1: सेवा के पीछे की भावना निवेदिता पीड़ितों को अपना समझती थीं। उनका सेवाभाव हृदय की करुणा से उपजा था। उन्होंने सेवा को केवल औपचारिक कर्तव्य नहीं माना; दूसरों का दुःख दूर करने के लिए स्वयं कठिनाइयाँ उठाईं। इसलिए उनकी सहायता में आत्मीयता और निःस्वार्थ समर्पण दिखाई देता था।

चरण 2: भावना को प्रमाणित करने वाले कार्य अकाल और बाढ़ के समय वे कीचड़ तथा कठिन रास्तों से होकर पीड़ितों तक पहुँचीं और उनकी भूख तथा बीमारी दूर करने में लगी रहीं। प्लेग के रोगियों की देखभाल करते हुए भी उन्होंने छुआछूत का विचार नहीं किया। ये प्रसंग बताते हैं कि मानव का दुःख उनके लिए किसी भी भेदभाव से बड़ा था।

चरण 3: निष्कर्ष निवेदिता की सेवा में करुणा, अपनापन और निःस्वार्थ त्याग था; इसीलिए रवींद्रनाथ ठाकुर उसे 'दिल की सेवा' कहते थे।

त्वरित सुझाव: 'दिल' शब्द का भाव आत्मीय करुणा से स्पष्ट करें और फिर बाढ़ या प्लेग की सेवा का उदाहरण जोड़ें।

7. 'एक पत्र' पाठ के आधार पर धर्मवीर भारती की साहित्यिक यात्रा का विवरण अपने शब्दों में दीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यिक यात्रा के विवरण में आरंभिक प्रेरणाओं, प्रमुख रचनाओं और विचारों के विकास को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- आत्मकथात्मक पत्र लेखक के अनुभवों तथा उसके लेखन के संबंध को समझने का आधार देता है; उत्तर केवल पुस्तकों की सूची नहीं होना चाहिए।

चरण 1: आरंभिक प्रेरणाएँ और लेखन भारती की साहित्यिक रुचि व्यापक अध्ययन से विकसित हुई। प्रसाद और ऑस्कर वाइल्ड ने उन्हें प्रभावित किया तथा माखनलाल चतुर्वेदी ने प्रोत्साहन दिया। पढ़ाई के दौरान उन्होंने 'अभ्युदय', 'संगम' और हिंदुस्तानी एकेडेमी में काम किया। इसी दौर में उनके आरंभिक कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए।

चरण 2: विचारों और रचनाओं का विकास एम.ए. के बाद मार्क्सवाद से परिचय हुआ, किंतु आगे भारतीय दर्शन और संत-साहित्य की मानववादी दृष्टि अधिक महत्त्वपूर्ण बनी। इस दौर से 'गुनाहों का देवता', 'प्रगतिवाद : एक समीक्षा' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसी रचनाएँ जुड़ी हैं। 'दूसरा सप्तक' में कविताएँ चुने जाने और 'ठंडा लोहा' के प्रकाशन से उनकी काव्य-यात्रा को पहचान मिली।

चरण 3: विविध विधाओं और पत्रकारिता की ओर विस्तार 'परिमल' से जुड़कर उन्होंने स्वतंत्र साहित्यिक चिंतन का समर्थन किया और 'निकष' निकाला। अध्यापन तथा अध्ययन के साथ 'ठेले पर हिमालय' और 'सिद्ध साहित्य' जैसी कृतियाँ आईं। बंबई जाने से पहले 'अंधा युग' और 'कनुप्रिया' प्रकाशित हो चुकी थीं। बाद में 'बंद गली का आखिरी मकान', 'कहनी अनकहनी' तथा 'पश्यंती' आए। पत्रकारिता की व्यस्तता ने स्वतंत्र लेखन का समय सीमित किया।

चरण 4: निष्कर्ष भारती की यात्रा कथा, कविता, नाटक, चिंतन और पत्रकारिता तक फैली। अध्ययन तथा जीवनानुभवों के साथ उनकी मानवीय दृष्टि विकसित होती गई।

त्वरित सुझाव: साहित्यिक यात्रा को तीन क्रमों में याद करें: आरंभिक प्रभाव, विचारों का विकास और प्रमुख विधाओं में रचनात्मक विस्तार।

अथवा

7. (अथवा) 'सत्यकिरण' एकांकी के आधार पर करुणादेवी के पारिवारिक और सामाजिक जीवन का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'सत्यकिरण' में करुणादेवी के सार्वजनिक आदर्शों और निजी आचरण के अंतर से कथनी और करनी का विरोधाभास प्रकट होता है।
- चरित्र का मूल्यांकन केवल समाज में बनी प्रतिष्ठा से नहीं, परिवार के सदस्यों के प्रति वास्तविक व्यवहार से भी करना चाहिए।

चरण 1: सामाजिक जीवन का आदर्शवादी रूप समझिए करुणादेवी समाज में अपने को त्यागमयी और सेवाभावी महिला के रूप में प्रस्तुत करती हैं। वे दावा करती हैं कि जनता की सेवा के लिए उन्होंने अपने सुख का त्याग किया है और नगर का बच्चा-बच्चा उनकी सेवाओं को जानता है। सड़कों और नालियों की सफाई, प्रौढ़ों को पढ़ाना और बीमारों की सेवा करना वे अपनी दिनचर्या बताती हैं। सार्वजनिक मंच पर वे पति-भक्ति के विषय में लंबे और सारगर्भित भाषण भी देती हैं। इससे समाज के सामने उनकी छवि कर्तव्यनिष्ठ समाजसेविका और आदर्श नारी की बनती है।

चरण 2: पारिवारिक व्यवहार से तुलना कीजिए उनका घरेलू आचरण इसी सार्वजनिक उपदेश के विपरीत है। सत्यकिरण के प्रभाव में वे स्वयं स्वीकार करती हैं कि उन्होंने घर में पति को गालियाँ दी हैं और उनसे झगड़ा किया है। इस प्रकार जिस पति-भक्ति की शिक्षा वे बाहर दूसरों को देती हैं, उसका पालन अपने घर में नहीं करतीं। विरोधाभास केवल सामाजिक कार्यों में व्यस्त होने का नहीं, बल्कि दूसरों के सामने प्रस्तुत आदर्श और अपने व्यवहार के अलग-अलग होने का है।

चरण 3: प्रतिष्ठा और वास्तविकता का अंतर पहचानिए करुणादेवी समाचार-पत्रों में अपना नाम छपवाना चाहती हैं, पर यह भी चाहती हैं कि ऐसा कोई निजी रहस्य प्रकाशित न हो जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और स्वार्थ को हानि पहुँचे। यह स्वीकारोक्ति बताती है कि

उन्हें अपने आचरण को सुधारने से अधिक सार्वजनिक छवि बचाने की चिंता है। एकांकीकार उनके माध्यम से उस दिखावे पर व्यंग्य करता है जिसमें व्यक्ति समाज के सामने ऊँचे आदर्शों का प्रचार करता है, पर निकट संबंधों में उन्हीं आदर्शों की उपेक्षा करता है।

चरण 4: निष्कर्ष करुणादेवी के सामाजिक जीवन में सेवा, त्याग और पति-भक्ति का प्रचार है, जबकि पारिवारिक जीवन में पति के प्रति अपमान और झगड़ा है। उनके जीवन का मुख्य विरोधाभास आदर्शवादी कथनी और उसके विपरीत करनी में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मंच पर पति-भक्ति का भाषण और घर में पति से झगड़े की स्वीकारोक्ति को आमने-सामने रखिए; यही विरोधाभास का सबसे स्पष्ट पाठगत प्रमाण है।

8(क). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) युद्ध में देवीसिंह ने कफ़नसिंह के रूप में क्या भूमिका निभाई ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रसंग रामनगर के गढ़ पर अधिकार करने के अभियान से संबंधित है। इसमें देवीसिंह की वीरता के साथ उसकी सैनिक सूझबूझ भी सामने आती है।
- देवीसिंह ने अपनी राजकीय पहचान छिपाकर साधारण सैनिक की तरह संकट उठाया और कफ़नसिंह बुंदेला नाम बताया।

चरण 1: छद्मवेश में दिखाई वीरता स्पष्ट कीजिए देवीसिंह कफ़नसिंह के रूप में लोचनसिंह के सैनिक दल में शामिल हुआ। रात में नदी की तेज धार और शत्रु की गोलियों के बीच वह आगे बढ़ा। जब लोचनसिंह को नाव तक पहुँचने में कठिनाई हुई, तब उसने साहस दिखाया और नाव पर चढ़ने का प्रयास किया। धकेल दिए जाने पर भी वह पीछे नहीं हटा और फिर नाव पर चढ़ गया। उसके पीछे लोचनसिंह तथा अन्य सैनिक भी पहुँचे। इस प्रकार उसने स्वयं जोखिम उठाकर साथियों का उत्साह बढ़ाया।

चरण 2: विजय में उसकी रणनीतिक भूमिका बताइए रामनगर के फाटक पर केवल गोलियाँ दागने के बजाय उसने जोर का हल्ला बोलने का सुझाव दिया। वह स्वयं फाटक के पास पहुँचा और ऊँचे स्वर में पुकारने लगा। शोर और आक्रमण से रक्षकों में घबराहट हुई; दल को भीतर घुसने का अवसर मिला और गढ़ पर अधिकार हो गया। विजय के बाद उसने फाटक बंद कर अपनी सेना को जयघोष द्वारा बुलाने की सलाह भी दी, ताकि प्राप्त सफलता सुरक्षित रहे। लोचनसिंह ने विजय का श्रेय उसी सैनिक को दिया। बाद में देवीसिंह ने वही स्वर निकालकर अपनी छिपी पहचान प्रकट की।

चरण 3: निष्कर्ष कफ़नसिंह बनकर देवीसिंह ने साधारण सैनिक की तरह युद्ध किया और साहस, व्यावहारिक सुझाव तथा समय पर कार्रवाई से रामनगर की विजय में निर्णायक भूमिका निभाई।

त्वरित सुझाव: भूमिका समझाते समय तीन घटनाएँ जोड़िए: नदी और नाव का संकट, फाटक पर हल्ला और विजय के बाद गढ़ की सुरक्षा की सलाह।

8(ख). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(ख) अंत में कुमुद को क्या क़दम उठाना पड़ा और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुमुद का अंतिम निर्णय उसके आत्मसम्मान और युद्ध से उत्पन्न असहाय परिस्थिति से जुड़ा है। प्रश्न में उसके उठाए कदम के साथ उसका कारण भी बताना आवश्यक है।
- उपन्यास में कुमुद का सौंदर्य शासकों के आकर्षण का विषय बनता है, किंतु उसके अपने व्यक्तित्व में स्वाभिमान और स्वतंत्र इच्छा का विशेष महत्त्व है।

चरण 1: अंतिम संकट की परिस्थिति समझिए युद्ध के अंत में कुमुद की रक्षा करने वाली शक्ति परास्त हो जाती है। उसके सामने शत्रु के हाथ पड़ने का संकट उपस्थित होता है। अलीमर्दान उसे प्राप्त करना चाहता था। इसलिए पराजय उसके लिए केवल राज्य अथवा आश्रय छिनने की घटना नहीं थी; उससे उसकी अपनी स्वतंत्रता और सम्मान भी संकट में पड़ गए थे। वह स्वयं को किसी विजेता की इच्छा के अधीन कर देने को तैयार नहीं थी।

चरण 2: कुमुद का कदम और उसका कारण बताइए ऐसी विकट परिस्थिति में कुमुद को बेतवा नदी में कूदकर अपने प्राण त्यागने पड़े। उसने शत्रु के हाथ पड़कर अपमानित जीवन बिताने के स्थान पर मृत्यु को स्वीकार किया। इस निर्णय के पीछे अपने सतीत्व, मर्यादा और स्वाभिमान की रक्षा का भाव था। उपन्यास के घटनाक्रम में उसका यह अंत युद्ध और सत्ता के संघर्ष से उत्पन्न त्रासदी को प्रकट करता है। उसका बलिदान यह भी स्पष्ट करता है कि उसे केवल सौंदर्य की वस्तु मानकर प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले लोग उसकी स्वतंत्र इच्छा को नहीं जीत सके।

चरण 3: निष्कर्ष अंत में कुमुद ने अपने सम्मान और सतीत्व की रक्षा के लिए बेतवा नदी में कूदकर प्राण त्याग दिए। युद्ध में रक्षक शक्ति के नष्ट हो जाने पर वह अलीमर्दान के हाथ पड़ना स्वीकार नहीं करना चाहती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कदम और कारण दोनों लिखिए: बेतवा में प्राणत्याग तथा शत्रु के हाथ पड़ने से बचकर अपने सम्मान की रक्षा।

8(ग). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(ग) राजा देवीसिंह से अपने प्रति उपेक्षा की बात नरपति से सुनकर गोमती पर क्या प्रतिक्रिया हुई ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र की प्रतिक्रिया में उसके भाव, शारीरिक दशा और बाद के निर्णय का क्रम स्पष्ट करना चाहिए।
- गोमती की पीड़ा को देवीसिंह से उसके अपेक्षित वैवाहिक संबंध और आत्मसम्मान के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

चरण 1: उपेक्षा का समाचार नरपति ने बताया कि देवीसिंह ने गोमती की चर्चा स्वयं नहीं की। विवाह की बात याद दिलाने पर भी उन्होंने उत्साह नहीं दिखाया। इससे गोमती की आशा को गहरा आघात पहुँचा।

चरण 2: तत्काल मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रिया गोमती को पसीना आने लगा और सिर चकराने लगा। राजाओं का संबंध राजाओं में होने की बात सुनकर वह चीखकर कुमुद से लिपट गई। नरपति को लगा कि वह अचेत हो गई है, किंतु वह वास्तव में अचेत नहीं थी; तीव्र मानसिक और शारीरिक कष्ट झेल रही थी। उसका गला सूख गया और वह बोल नहीं पाई।

चरण 3: कुमुद का सहारा और गोमती का निर्णय कुमुद ने उसे सँभाला, पंखा झला और धैर्य दिया। कुछ सँभलने पर गोमती ने सिसकते हुए उससे अपने को न छोड़ने तथा जीवनभर अपने पास रखने का अनुरोध किया। उसने कुमुद के साथ रहने का निश्चय प्रकट किया। इस प्रतिक्रिया से समझ में आता है कि उसे केवल महल में पहुँचने की चिंता नहीं थी। जिस संबंध को वह अपने जीवन का आधार समझ रही थी, उसी की अवहेलना ने उसके मन को चोट पहुँचाई। कुमुद के प्रति उसका विश्वास इस संकट में और अधिक स्पष्ट हो जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष उपेक्षा से गोमती अत्यंत दुखी और निराश हुई; उसकी शारीरिक दशा भी बिगड़ गई। उसे कुमुद के स्नेह में सहारा मिला।

त्वरित सुझाव: प्रतिक्रिया लिखते समय क्रम रखें: उपेक्षा का आघात, पसीना और चक्कर, कुमुद से लिपटना, फिर उसी के साथ रहने की इच्छा।

9. आपके विचार से 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास का क्या उद्देश्य है ? लेखक उसके प्रतिपादन में कहाँ तक सफल हुआ है ? — तर्कसम्मत उत्तर दीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐतिहासिक उपन्यास का उद्देश्य उसके संघर्ष, पात्रों और परिणाम से स्पष्ट होता है।
- तर्कसम्मत मूल्यांकन में उद्देश्य बताने के साथ कथानक से उसके समर्थन के उदाहरण देने चाहिए।

चरण 1: उपन्यास का मुख्य उद्देश्य मेरे विचार में वृंदावनलाल वर्मा के 'विराटा की पद्मिनी' का मुख्य उद्देश्य बुंदेलखंड की वीरता, त्याग और नारी के आत्मसम्मान को प्रतिष्ठित करना है। लोकस्मृति से जुड़ी कुमुद की कथा के माध्यम से लेखक मानवीय गरिमा का मूल्य सामने रखते हैं। साथ ही राजसत्ता की लालसा, छल और स्वार्थ से उत्पन्न संघर्षों के दुष्परिणाम भी दिखाते हैं।

चरण 2: पात्रों और घटनाओं में उद्देश्य का प्रतिपादन कुमुद का करुणा और दृढ़ता से युक्त व्यक्तित्व इस उद्देश्य का केंद्र है। वह दुखी गोमती को सहारा देती है और संकट में भी अपनी मर्यादा का आग्रह नहीं छोड़ती। उसके जीवन का दुखांत संघर्ष पाठक को नारी की असुरक्षा तथा उसकी इच्छाओं की उपेक्षा पर सोचने के लिए विवश करता है। दूसरी ओर राज्य प्राप्ति के षड्यंत्र यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा किस प्रकार संबंधों और सामाजिक शांति को चोट पहुँचाती है।

चरण 3: लेखक की सफलता का मूल्यांकन लेखक अपने उद्देश्य में पर्याप्त सफल हुए हैं, क्योंकि संदेश घटनाओं और पात्रों के आचरण से उभरता है। कुमुद के प्रति सहानुभूति तथा छलपूर्ण राजनीति के प्रति असहमति पाठक में सहज रूप से उत्पन्न होती है। बुंदेलखंड का परिवेश कथा को स्थानीय जीवन से जोड़ता है। फिर भी इसे क्रमबद्ध, शुद्ध इतिहास नहीं मानना चाहिए: लेखक ने स्वयं विभिन्न कालों की घटनाओं को एक कथासूत्र में पिरोने की बात स्वीकार की है। इसका प्रमुख मूल्य ऐतिहासिक सामग्री का साहित्यिक और मानवीय रूपांतरण है।

चरण 4: निष्कर्ष उपन्यास वीरता, त्याग और नारी की गरिमा की स्थापना करता है तथा सत्ता के स्वार्थ की हानियाँ दिखाता है। प्रभावपूर्ण चरित्रों और मार्मिक संघर्षों के कारण लेखक उद्देश्य के प्रतिपादन में पर्याप्त सफल हैं।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य के उत्तर में कथासार भर न लिखें; प्रत्येक मूल्य के साथ एक प्रसंग जोड़ें और अंत में लेखक की सफलता पर अपना तर्क दें।

अथवा

9. (अथवा) उपन्यास में 'विराटा की पद्मिनी' किसे कहा गया है ? उसके चरित्र की तीन प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में विशेषता के साथ उसका प्रमाण देनेवाला प्रसंग आवश्यक है।
- उपन्यास की नायिका के व्यक्तित्व को बाहरी रूप, मानवीय व्यवहार और संकट में किए गए निर्णय से समझा जा सकता है।

चरण 1: विराटा की पद्मिनी की पहचान वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास में कुमुद को 'विराटा की पद्मिनी' कहा गया है। विराटा में रहनेवाली यह दाँगी कन्या अपने अनुपम सौंदर्य और उदात्त चरित्र के कारण इस नाम से प्रतिष्ठित होती है। उसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

चरण 2: अनुपम सौंदर्य और गरिमामय व्यक्तित्व कुमुद का रूप अत्यंत आकर्षक है। उसकी प्रसिद्धि दूर तक फैलती है और लोग उसे देवी दुर्गा का स्वरूप मानकर आदर देते हैं। कुंजरसिंह भी उससे प्रभावित होता है। इस सौंदर्य के साथ उसकी गंभीरता और पवित्र आचरण जुड़े हैं; इसलिए उसका प्रभाव केवल शारीरिक आकर्षण तक सीमित नहीं रहता।

चरण 3: करुणा और सहृदयता वह दूसरे के दुख को समझती है। जब देवीसिंह की उपेक्षा का समाचार सुनकर गोमती अत्यंत व्यथित हो जाती है, तब कुमुद उसे अपनी गोद में सँभालती है, पंखा झलती है और धैर्य बँधाती है। इससे उसका मातृवत स्नेह और सेवाभाव प्रकट

होता है। सम्मान पाने पर भी वह दुखी सहचरी की सहायता को अपने लिए छोटा काम नहीं मानती।

चरण 4: आत्मसम्मान और दृढ़ता विपत्ति और शक्तिशाली व्यक्तियों के दबाव के सामने कुमुद अपनी मर्यादा को महत्त्व देती है। अलीमर्दान की इच्छा के अधीन होना उसे स्वीकार नहीं है। अंत का बेतवा में जलसमाधि लेने का प्रसंग उसके दुखांत संघर्ष और अस्मिता के आग्रह को चरम रूप में व्यक्त करता है। लेखक इस प्रसंग से उसके आत्मसम्मान को कथा का केंद्रीय मूल्य बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष 'विराटा की पद्मिनी' कुमुद है। अनुपम सौंदर्य, करुणामयी सहृदयता तथा आत्मसम्मान की दृढ़ रक्षा उसके चरित्र की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: पहले कुमुद का नाम लिखें; फिर तीन अलग विशेषताएँ चुनकर हर एक के साथ संबंधित घटना दें, केवल विशेषणों की सूची न बनाएँ।

10. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :

तुम मेरे लिए एक भेड़ का चित्र बना दो। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद-परिचय में शब्द का भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक तथा वाक्य के अन्य पदों से उसका संबंध बताया जाता है। सर्वनाम के परिचय में पुरुष भी बताया जाता है।
- परसर्ग सहित रेखांकित अंश का परिचय देते समय मूल संज्ञा या सर्वनाम और उसके कारक-चिह्न को अलग पहचानना चाहिए। केवल परसर्ग के रूप से मूल शब्द का लिंग नहीं बदलता।

चरण 1: पहले रेखांकित पद का स्वरूप पहचानिए "मेरे लिए में "मेरे मूल सर्वनाम "मैं का परसर्गयुक्त रूप है। यह पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष और एकवचन है। "मैं का प्रयोग स्त्री और पुरुष दोनों वक्ताओं के लिए होता है; इसलिए यहाँ वक्ता का लिंग निश्चित नहीं किया जा सकता। "के लिए के साथ "मैं का मानक रूप "मेरे लिए बनता है।

चरण 2: पहले पद का कारक और संबंध बताइए "मेरे लिए संप्रदान कारक में है। यह बताता है कि चित्र बनाने की क्रिया किसके लिए की जानी है। अतः इसका संबंध "बना दो क्रिया से है और इसका आशय बोलने वाले के लिए चित्र बनाने से है। यहाँ "मेरे को केवल "मेरे के रूप के आधार पर बहुवचन या संबंध कारक कहना उचित नहीं होगा।

चरण 3: दूसरे रेखांकित पद का परिचय दीजिए "भेड़ का में "भेड़ जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन और संबंध कारक में है; "का संबंध कारक का चिह्न है। इसका संबंध "चित्र संज्ञा से है और यह बताता है कि चित्र किसका बनाना है। "का का पुल्लिंग एकवचन रूप आगे आए "चित्र के अनुसार है; इससे "भेड़ का स्त्रीलिंग नहीं बदलता। पूरा अंश "चित्र की विशेषता बताता है।

चरण 4: निष्कर्ष "मेरे लिए—पुरुषवाचक सर्वनाम का उत्तम पुरुष, एकवचन, संप्रदान कारक वाला प्रयोग; संबंध "बना दो से। "भेड़ का—जातिवाचक संज्ञा "भेड़, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक; संबंध "चित्र से।

त्वरित सुझाव: "किसके लिए बना दो? से संप्रदान और "किसका चित्र? से संबंध कारक पहचानिए; "का देखकर भेड़ को पुल्लिंग न लिखिए।

11(क). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

(क) सारे गाँव को सूचित कर दिया गया। (कर्तृवाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्तृवाच्य में काम करने वाला कर्ता प्रधान होता है; कर्मवाच्य में क्रिया कर्म को प्रमुख बनाकर कही जाती है।
- अप्रकट कर्ता वाले कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में बदलते समय उपयुक्त सामान्य कर्ता जोड़ा जाता है और मूल काल तथा आशय बनाए

रखे जाते हैं।

चरण 1: मूल वाक्य की रचना पहचानिए "सूचित कर दिया गया कर्मवाच्य की क्रिया है। सूचना देने वाला कर्ता वाक्य में प्रकट नहीं है। "सारे गाँव को सूचना पाने वालों को बताता है।

चरण 2: कर्ता और क्रिया का रूप बदलिए अप्रकट कर्ता के लिए "किसी ने रख सकते हैं। कर्मवाच्य का सहायक अंश "गया हटाकर क्रिया "सूचित कर दिया होगी। "सारे गाँव को यथावत रहेगा, जिससे सूचना पाने वालों और पूर्ण हो चुकी क्रिया का अर्थ सुरक्षित रहेगा।

चरण 3: निष्कर्ष कर्तृवाच्य: किसी ने सारे गाँव को सूचित कर दिया।

त्वरित सुझाव: अप्रकट कर्ता के लिए "किसी ने जोड़िए और "कर दिया गया को "कर दिया में बदलिए; "को बना रहने दीजिए।

11(ख). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

(ख) कलाकार ने शंकराचार्य के लिए हंस का चित्र बनाया। (कर्मवाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है और कर्ता के साथ "के द्वारा या "से लगाया जाता है।
- सकर्मक क्रिया के कर्मवाच्य में मुख्य क्रिया के साथ "जाना का उचित रूप आता है और क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुकूल होती है।

चरण 1: कर्ता और कर्म पहचानिए दिए गए वाक्य का कर्ता "कलाकार है और कर्म "हंस का चित्र है। "शंकराचार्य के लिए बताता है कि चित्र किसके लिए बनाया गया; इसे यथावत रखना है।

चरण 2: कर्मवाच्य की रचना बनाइए "कलाकार ने के स्थान पर "कलाकार के द्वारा रखिए। कर्म का प्रधान शब्द "चित्र पुल्लिंग एकवचन है, इसलिए भूतकाल की क्रिया "बनाया गया होगी। केवल "गया जोड़कर कर्ता के साथ "ने छोड़ देना सही परिवर्तन नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष कर्मवाच्य: कलाकार के द्वारा शंकराचार्य के लिए हंस का चित्र बनाया गया।

त्वरित सुझाव: यहाँ क्रिया का मेल "चित्र से कीजिए: "बनाया गया। कर्ता का "ने हटाकर "के द्वारा लगाना न भूलिए।

11(ग). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

(ग) मैं दौड़ नहीं सकता। (भाववाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है। अकर्मक क्रिया का भाववाच्य बनाते समय कर्ता के साथ "से लगाया जाता है।
- भाववाच्य में क्रिया सामान्यतः अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है। असमर्थता का आशय नकारात्मक रचना से बनाए रखा जाता है।

चरण 1: अकर्मक क्रिया और असमर्थता पहचानिए "दौड़ना अकर्मक क्रिया है; यहाँ कोई कर्म नहीं है। "नहीं सकता से वक्ता की दौड़ने में असमर्थता व्यक्त होती है। परिवर्तन करते समय यही अर्थ सुरक्षित रखना है।

चरण 2: भाववाच्य का क्रियारूप बनाइए "मैं के साथ "से लगाने पर "मुझसे बनेगा। "दौड़ नहीं सकता के स्थान पर "दौड़ा नहीं जाता रखेंगे। "दौड़ा जाता पुल्लिंग एकवचन का भाववाच्य रूप है और "नहीं मूल असमर्थता बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाववाच्य: मुझसे दौड़ा नहीं जाता।

त्वरित सुझाव: "मैं को "मुझसे और "दौड़ नहीं सकता को "दौड़ा नहीं जाता में बदलकर असमर्थता का भाव बनाए रखिए।

12(क). किन्हीं दो पदों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए :

चौराहा, देशभक्ति, करकमल। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास-विग्रह में समस्त पद के दोनों पदों का अर्थ-संबंध स्पष्ट किया जाता है। समास का नाम इसी संबंध के आधार पर तय होता है।
- संख्यावाचक पूर्वपद और समूह का बोध द्विगु की पहचान है; तुलना का बोध कर्मधारय में और लुप्त परसर्ग का संबंध तत्पुरुष में मिलता है।

चरण 1: चौराहा का विग्रह कीजिए चौराहा—चार राहों का समूह अथवा चार राहों का मिलन-स्थान। इसका समास द्विगु है। यहाँ "चार संख्यावाचक पूर्वपद है और राहों के एक साथ मिलने का सामूहिक बोध होता है। केवल संख्या होना पर्याप्त नहीं; समूह का अर्थ भी देखना चाहिए।

चरण 2: देशभक्ति का विग्रह कीजिए देशभक्ति—देश के प्रति भक्ति। इसका समास तत्पुरुष है। "देश और "भक्ति के बीच का संबंध विग्रह में "के प्रति से स्पष्ट होता है, जबकि समस्त पद में यह परसर्ग व्यक्त नहीं है। उत्तरपद "भक्ति प्रधान है।

चरण 3: करकमल का विग्रह कीजिए करकमल—कमल के समान कर। इसका समास कर्मधारय है। "कर का अर्थ हाथ है और उसकी तुलना "कमल से की गई है। हाथ और कमल दो स्वतंत्र वस्तुओं की सूची नहीं बनाते; हाथ को कमल जैसा बताया गया है।

चरण 4: निष्कर्ष चौराहा—चार राहों का समूह: द्विगु। देशभक्ति—देश के प्रति भक्ति: तत्पुरुष। करकमल—कमल के समान कर: कर्मधारय।

त्वरित सुझाव: "चार के साथ समूह, "के प्रति के साथ संबंध और "के समान के साथ तुलना देखिए; इनसे तीनों समास अलग होंगे।

12(ख). किन्हीं दो पद-समूह से समस्त पद बनाइए और समास का नाम लिखिए :

दो या चार, लम्बा है उदर जिसका, प्रत्येक दिन। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विग्रह से समस्त पद बनाते समय दोनों पदों का अर्थ और आपसी संबंध बनाए रखिए। समास का नाम शब्द की बनावट के साथ उसके आशय से भी तय होता है।
- "या से विकल्प देने वाले पद द्वंद्व, किसी अन्य व्यक्ति का बोध कराने वाला पद बहुव्रीहि और अव्यय की प्रधानता वाला पद अव्ययीभाव हो सकता है।

चरण 1: दो या चार का समस्त पद बनाइए दो या चार—दो-चार। इसका समास द्वंद्व है, विशेषत: विकल्प का बोध कराने वाला द्वंद्व। विग्रह में "या आता है और दोनों संख्यावाचक पद अपना महत्त्व रखते हैं। इसे केवल संख्याएँ होने के कारण द्विगु न मानें; यहाँ किसी निश्चित संख्या के समूह का विग्रह नहीं दिया गया है।

चरण 2: लम्बा है उदर जिसका का समस्त पद बनाइए लम्बा है उदर जिसका—लम्बोदर। इसका समास बहुव्रीहि है। पद का अभिप्राय केवल लम्बे उदर से नहीं, बल्कि उस व्यक्ति से है जिसका उदर लम्बा है। "जिसका किसी अन्य व्यक्ति का बोध कराता है; यही बहुव्रीहि की निर्णायक पहचान है।

चरण 3: प्रत्येक दिन का समस्त पद बनाइए प्रत्येक दिन—प्रतिदिन। इसका समास अव्ययीभाव है। पूर्वपद "प्रति का अर्थ प्रत्येक है और पूरा शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाला अव्यय बनता है। इसका रूप लिंग या वचन के अनुसार नहीं बदलता।

चरण 4: निष्कर्ष दो या चार—दो-चार, द्वंद्व समास। लम्बा है उदर जिसका—लम्बोदर, बहुव्रीहि समास। प्रत्येक दिन—प्रतिदिन, अव्ययीभाव समास।

त्वरित सुझाव: विग्रह के संकेत याद रखिए: "या से द्वंद्व, "जिसका से अन्य व्यक्ति का बोध होने पर बहुव्रीहि और "प्रत्येक दिन से प्रतिदिन।

13(क). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(क) घर लौट जाते समय वर्षा होने लगी। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-शुद्धि में अनावश्यक या गलत शब्द हटाकर अर्थ और व्याकरण दोनों को स्पष्ट रखा जाता है।
- किसी क्रिया के समय दूसरी घटना होने का बोध कराने के लिए "क्रिया + ते समय की रचना होती है, जैसे "पढ़ते समय।

चरण 1: अशुद्ध अंश पहचानिए "घर लौट जाते समय में "लौट और "जाते का मेल इस प्रसंग में अनावश्यक और असंगत है। आशय यह है कि घर लौटने के दौरान वर्षा शुरू हो गई। इसलिए समयसूचक अंश को सीधे "लौटते समय कहना चाहिए।

चरण 2: समयसूचक रचना सुधारिए "लौट जाते समय के स्थान पर "लौटते समय रखिए। शेष अंश "वर्षा होने लगी सही है; वह वर्षा के प्रारम्भ का बोध कराता है और उसे बदलने की आवश्यकता नहीं है। इससे मूल आशय भी बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: घर लौटते समय वर्षा होने लगी।

त्वरित सुझाव: "लौट के साथ सीधे "ते समय जोड़कर "लौटते समय लिखिए; अतिरिक्त "जाते हटाने से वाक्य स्पष्ट हो जाएगा।

13(ख). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(ख) लगभग सौ के क़रीब श्रोता उपस्थित थे। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य में समान अर्थ देने वाले अनावश्यक शब्दों का दोहराव पुनरुक्ति-दोष कहलाता है।
- अनुमानित संख्या के लिए 'लगभग' या 'के क़रीब' में से किसी एक का प्रयोग पर्याप्त है।

चरण 1: समानार्थी प्रयोग पहचानिए दिए गए वाक्य में 'लगभग' और 'के क़रीब' दोनों बताते हैं कि श्रोताओं की संख्या ठीक सौ न होकर उसके आसपास थी। दोनों पद साथ रखने से अर्थ की अनावश्यक पुनरावृत्ति होती है।

चरण 2: अनुमान का अर्थ सुरक्षित रखिए 'के क़रीब' हटाकर 'लगभग' रखा जा सकता है। 'सौ श्रोता उपस्थित थे' लिखने से संख्या निश्चित हो जाएगी, इसलिए दोनों अनुमानसूचक पद एक साथ नहीं हटाने चाहिए। शेष वाक्य की संज्ञा और क्रिया में कोई परिवर्तन आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: लगभग सौ श्रोता उपस्थित थे।

त्वरित सुझाव: 'लगभग' और 'के क़रीब' साथ दिखें तो एक हटाएँ; संख्या का अनुमानित होना बना रहने दें।

13(ग). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(ग) आप चाहो तो कल हमारे साथ चल सकते हो। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आदरसूचक सर्वनाम 'आप' के साथ क्रिया का आदरसूचक बहुवचन रूप प्रयुक्त होता है।
- पूरे वाक्य में संबोधन का स्तर एक जैसा रहना चाहिए; 'आप' के साथ 'तुम' वाली क्रियाएँ नहीं लगतीं।

चरण 1: सर्वनाम और क्रिया का मेल जाँचिए वाक्य का संबोधन 'आप' है, जो आदर व्यक्त करता है। इसके बाद आया 'चाहो' तथा अंत

में आया 'हो' साधारण संबोधन 'तुम' के अनुकूल हैं। इसलिए दोनों स्थानों पर आदरसूचक रूप आवश्यक है।

चरण 2: आदरसूचक रूप चुनिए 'चाहो' को 'चाहें' और 'हो' को 'हैं' करेंगे। 'कल हमारे साथ' समय और साथ जाने का वही अर्थ रखता है; उसे बदलने की आवश्यकता नहीं है। इस तरह पूरे कथन में आदर का एक ही स्तर बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: आप चाहें तो कल हमारे साथ चल सकते हैं।

त्वरित सुझाव: सर्वनाम 'आप' देखते ही उससे जुड़ी सभी क्रियाएँ जाँचें; केवल पहली क्रिया सुधारना पर्याप्त नहीं है।

14(क). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) उस कोठी में तीन आँगन थे और कोठी के अंदर ही दो कुएँ थे। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े रहते हैं।
- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उस पर आश्रित उपवाक्य होता है।

चरण 1: दोनों उपवाक्य अलग कीजिए पहला उपवाक्य है 'उस कोठी में तीन आँगन थे' और दूसरा है 'कोठी के अंदर ही दो कुएँ थे'। दोनों में अपनी पूर्ण क्रिया 'थे' है और दोनों अलग-अलग भी पूरा अर्थ देते हैं।

चरण 2: जोड़ने वाले शब्द का कार्य समझिए दोनों स्वतंत्र कथन 'और' से जुड़े हैं। यहाँ 'और' समान स्तर के उपवाक्यों को जोड़ने वाला समुच्चयबोधक है। कोई उपवाक्य दूसरे के अधीन नहीं है; अतः इसे मिश्र वाक्य नहीं कहेंगे। दो स्वतंत्र उपवाक्य होने से यह सरल भी नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के आधार पर यह संयुक्त वाक्य है।

त्वरित सुझाव: 'और' के दोनों ओर पूर्ण, स्वतंत्र कथन मिलें तो संयुक्त वाक्य पहचानें; केवल शब्दों का जुड़ना पर्याप्त नहीं है।

14(ख). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(ख) मूँगा गूँगे ने अच्छे तैराक के रूप में ख्याति प्राप्त की। (अर्थ के अनुसार वाक्य-भेद बताइए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विधानवाचक वाक्य किसी घटना, स्थिति या कार्य के होने का सामान्य सकारात्मक कथन करता है।
- अर्थ के आधार पर वर्गीकरण करते समय कथन, प्रश्न, निषेध, आज्ञा या इच्छा का भाव देखा जाता है।

चरण 1: कथन का भाव पहचानिए दिए गए वाक्य में मूँगा गूँगे के अच्छे तैराक के रूप में प्रसिद्ध होने की बात कही गई है। 'ख्याति प्राप्त की' कार्य के हो चुकने की सामान्य सूचना देता है। इसमें उस कार्य के होने से इनकार नहीं किया गया है।

चरण 2: अन्य भावों से अंतर कीजिए वाक्य में न प्रश्न पूछा गया है, न आदेश दिया गया है और न ही इच्छा या संदेह प्रकट हुआ है। यह एक सकारात्मक तथ्य का कथन है। प्रश्न अर्थ के अनुसार भेद पूछता है, इसलिए उत्तर में सरल या संयुक्त जैसे रचना-आधारित नाम नहीं लिखेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष अर्थ के अनुसार यह विधानवाचक अथवा विधिवाचक वाक्य है।

त्वरित सुझाव: 'ख्याति प्राप्त की' में कार्य होने की सीधी सूचना है; अर्थ के आधार पर इसे विधानवाचक पहचानें।

14(ग). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(ग) घर जाते समय मैनें देखा कि दो लोग लड़ रहे थे। (मिश्र वाक्य में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में प्रधान उपवाक्य के साथ एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।
- समयसूचक पदबंध को 'जब' से आरंभ होने वाले कालवाचक आश्रित उपवाक्य में बदला जा सकता है।

चरण 1: मूल रचना पहचानिए मूल वाक्य में 'मैंने देखा' प्रधान उपवाक्य है और 'कि दो लोग लड़ रहे थे' उसका आश्रित संज्ञा उपवाक्य है। इसलिए दी हुई रचना में मिश्र वाक्य का गुण पहले से मौजूद है। 'घर जाते समय' अभी समय बताने वाला पदबंध है।

चरण 2: समयसूचक पदबंध का विस्तार कीजिए 'घर जाते समय' को 'जब मैं घर जा रहा था' में बदलने से पूरा कालवाचक आश्रित उपवाक्य बनता है। इसे 'तब मैंने देखा' से जोड़ेंगे और देखने का विषय बताने वाला 'कि' उपवाक्य बनाए रखेंगे। इससे घर जाते हुए दो लोगों को लड़ते देखने का मूल अर्थ सुरक्षित रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्र वाक्य: जब मैं घर जा रहा था, तब मैंने देखा कि दो लोग लड़ रहे थे।

त्वरित सुझाव: 'जाते समय' को 'जब ... जा रहा था' में खोलें और 'कि' से जुड़े देखने के विषय को न हटाएँ।

14(घ). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(घ) फार्म जमा करने के लिए मुख्यालय में जाइए। (संकेतार्थ में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संकेतार्थक वाक्य में किसी कार्य का होना किसी शर्त या स्थिति पर निर्भर बताया जाता है।
- 'यदि ... तो' या 'अगर ... तो' का प्रयोग शर्त और उससे जुड़ी बात को स्पष्ट करता है।

चरण 1: मूल उद्देश्य पहचानिए दिए गए वाक्य में मुख्यालय जाने का उद्देश्य फार्म जमा करना है। 'जाइए' से सामान्य निर्देश मिलता है, लेकिन कोई शर्त स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हुई है। संकेतार्थक रूप में उसी उद्देश्य को शर्त के रूप में रखेंगे।

चरण 2: शर्त और निर्देश जोड़िए पहले खंड में 'यदि आपको फार्म जमा करना है' लिखने से शर्त सामने आती है। उसके बाद 'तो' लगाकर मुख्यालय जाने का निर्देश जोड़ेंगे। इस रूप में कार्य और स्थान वही रहते हैं तथा मुख्यालय जाने की आवश्यकता फार्म जमा करने की स्थिति से जुड़ जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष संकेतार्थक वाक्य: यदि आपको फार्म जमा करना है, तो मुख्यालय में जाइए।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य बताने वाले 'करने के लिए' को 'यदि ... करना है, तो ...' में बदलकर शर्त स्पष्ट करें।

15(क). वाक्य-विश्लेषण कीजिए :

तुम्हारे भाई गोपाल ने गणेश को बहुत मारा। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सरल वाक्य के विश्लेषण में उद्देश्य और विधेय अलग किए जाते हैं। उद्देश्य जिसके विषय में कथन हो, वह भाग है; विधेय उसके बारे में कही गई बात है।

- उद्देश्य में कर्ता तथा उसका विस्तार और विधेय में क्रिया, कर्म तथा क्रिया का विस्तार पहचाना जाता है।

चरण 1: उद्देश्य और कर्ता का विस्तार पहचानिए वाक्य में मारने का कार्य गोपाल ने किया है, इसलिए मुख्य कर्ता 'गोपाल' है। 'तुम्हारे भाई' गोपाल का परिचय देने वाला विस्तार है। इस प्रकार 'तुम्हारे भाई गोपाल ने' पूरा उद्देश्य है। 'ने' कर्ता के साथ लगा कारक-चिह्न है; इसे अलग कर्ता नहीं माना जाएगा।

चरण 2: विधेय के अंग स्पष्ट कीजिए गोपाल के विषय में कही गई बात 'गणेश को बहुत मारा' है, इसलिए यह पूरा विधेय है। इसमें 'मारा' सकर्मक क्रिया है। 'किसको मारा?' पूछने पर 'गणेश को' उत्तर मिलता है, इसलिए वह कर्म है। 'बहुत' मारने की मात्रा या तीव्रता बताता है; यह क्रियाविशेषण के रूप में क्रिया का विस्तार है।

चरण 3: निष्कर्ष उद्देश्य: तुम्हारे भाई गोपाल ने। मुख्य कर्ता: गोपाल; कर्ता का विस्तार: तुम्हारे भाई; कर्ता का कारक-चिह्न: ने। विधेय: गणेश को बहुत मारा। कर्म: गणेश को; क्रिया: मारा; क्रिया का विस्तार: बहुत।

त्वरित सुझाव: 'किसने मारा?' से कर्ता, 'किसको मारा?' से कर्म और मारने की मात्रा बताने वाले 'बहुत' से क्रिया का विस्तार पहचानें।

15(ख). एक सरल वाक्य में संश्लेषण कीजिए :

मकान मामा जी का था।

मकान छोटा था।

मकान आरामदेह था। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-संश्लेषण में अनेक वाक्यों की बातें एक वाक्य में इस प्रकार मिलाई जाती हैं कि मूल अर्थ सुरक्षित रहे।
- सरल वाक्य में एक ही स्वतंत्र उपवाक्य होता है; एक संज्ञा के कई विशेषण होने से वाक्य संयुक्त नहीं बनता।

चरण 1: साझा विषय और सूचनाएँ पहचानिए तीनों वाक्यों का विषय एक ही मकान है। पहली सूचना उसका स्वामित्व बताती है कि वह मामा जी का था। दूसरी सूचना उसका छोटा होना और तीसरी उसका आरामदेह होना बताती है। संश्लेषण करते समय ये तीनों बातें रखनी हैं; केवल मकान का गुण बताकर स्वामित्व छोड़ना अधूरा उत्तर होगा।

चरण 2: विशेषणों को एक संज्ञा के साथ जोड़िए 'मामा जी का' को सीधे 'मकान' के साथ रखकर स्वामित्व स्पष्ट करेंगे। 'छोटा' और 'आरामदेह' को 'तथा' से जोड़कर उसी मकान के दो गुण बनाएँगे। अंत में एक ही पूर्ण क्रिया 'था' रहेगी। यहाँ 'तथा' दो विशेषणों को जोड़ता है, दो स्वतंत्र उपवाक्यों को नहीं; इसलिए बनी हुई रचना सरल है।

चरण 3: निष्कर्ष सरल वाक्य: मामा जी का मकान छोटा तथा आरामदेह था।

त्वरित सुझाव: बार-बार आए 'मकान' को एक बार रखें, स्वामित्व और दोनों गुण जोड़ें तथा पूर्ण क्रिया 'था' एक बार लिखें।

---

16. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

पानी का पानी और दूध का दूध करना

सफ़ाया करना

हाथ कंगन को आरसी क्या

आपे से बाहर होना [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के सामान्य अर्थ से अलग होता है। वाक्य में ऐसा प्रसंग होना चाहिए जिससे उसका प्रचलित अर्थ स्पष्ट हो जाए।
- लोकोक्ति लोकानुभव पर आधारित पूर्ण कथन होती है। उसका प्रयोग किसी बात का समर्थन करने या स्थिति पर टिप्पणी करने के लिए किया जाता है।

चरण 1: पानी का पानी और दूध का दूध करना अर्थ: सत्य और असत्य का स्पष्ट निर्णय करना।

वाक्य-प्रयोग: चोरी के मामले में जब न्यायाधीश ने गवाहों और प्रमाणों की जाँच की, तो पानी का पानी और दूध का दूध कर दिया; निर्दोष व्यक्ति छूट गया और असली अपराधी पकड़ा गया।

यहाँ प्रमाणों की जाँच से सही और गलत का भेद खुल जाने के कारण मुहावरे का अर्थ स्पष्ट होता है। इसका प्रयोग सचाई सामने लाने या निष्पक्ष न्याय करने के प्रसंग में किया जाता है।

चरण 2: सफ़ाया करना अर्थ: पूरी तरह नष्ट या समाप्त कर देना।

वाक्य-प्रयोग: किसानों ने समय पर कीटनाशक का छिड़काव करके फसल को नष्ट करने वाले कीड़ों का सफ़ाया कर दिया।

इस वाक्य में कीड़ों का पूरी तरह समाप्त होना व्यक्त हुआ है। केवल थोड़े से कीड़े कम हो जाने की बात कहने से इस मुहावरे का पूरा भाव स्पष्ट नहीं होता।

चरण 3: हाथ कंगन को आरसी क्या अर्थ: प्रत्यक्ष बात के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। आरसी का अर्थ दर्पण है।

वाक्य-प्रयोग: तुम कहते हो कि सीमा बहुत सुंदर चित्र बनाती है; यह सामने लगा चित्र उसकी कला का प्रमाण है, हाथ कंगन को आरसी क्या!

चित्र स्वयं सामने होने से सीमा की कला दिखाई दे रही है। जैसे हाथ में पहना कंगन देखने के लिए दर्पण आवश्यक नहीं, वैसे ही इस प्रत्यक्ष प्रमाण के रहते अलग सफ़ाई की आवश्यकता नहीं है।

चरण 4: आपे से बाहर होना अर्थ: क्रोध में अपना संयम खो देना।

वाक्य-प्रयोग: बार-बार समझाने पर भी दुकानदार को कम तौलते देखकर ग्राहक आपे से बाहर हो गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

यहाँ चिल्लाने की क्रिया से क्रोध में आत्मनियंत्रण खो देना स्पष्ट होता है। सामान्य अप्रसन्नता के बजाय अत्यधिक क्रोध का प्रसंग इस मुहावरे के लिए उपयुक्त है।

चरण 5: निष्कर्ष इन प्रयोगों में क्रमशः सत्य-असत्य का निर्णय, पूर्ण समाप्ति, प्रत्यक्ष बात के लिए प्रमाण की अनावश्यकता और क्रोध में संयम खोने के अर्थ स्पष्ट हुए हैं।

त्वरित सुझाव: पहले मुहावरे या लोकोक्ति का अर्थ पहचानिए, फिर वाक्य में ऐसी घटना जोड़िए जो उस अर्थ को अपने आप स्पष्ट कर दे।

17(क). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इतिहास की इस अविस्मरणीय घड़ी में, जब हम अपने देश का शासन सँभाल रहे हैं, आइए, हम उन लोगों की सेवाओं और बलिदान को नतमस्तक होकर याद करें, जिनकी मेहनत और कुर्बानी से हमें आज का दिन नसीब हुआ। हम आधुनिक इतिहास के निर्माता महात्मा गाँधी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें, जिन्होंने परीक्षा के इस वर्षों में हमें प्रेरित और निर्देशित किया और जो वर्षों का बोझ अपने कंधों पर ढोने के बावजूद अपने रास्ते से वह काम अभी भी पूरा कर रहे हैं, जिसे हासिल करना अभी बाकी है। यह निस्संदेह उल्लास का दिन है; लेकिन एक विचार है जो इस घटना की पूर्णता में खटक रहा है। भारत को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया है; इसकी संस्कृति, परंपरा और सदियों का इतिहास एक रहा है। वह आज विभाजित हो चुका है और बहुत से लोग सीमा के उस पार खड़े हैं, जिन्हें इसी पार होना चाहिए था। आज वहाँ स्थापित होने जा रहे नए शासन को हम शुभकामनाएँ देते हैं और वे भी अपने नागरिकों की खुशहाली और समृद्धि के कार्य में सफल हों। आइए, हम उम्मीद और दुआ करें कि वह दिन भी आएगा जब वे भी भारत की अनिवार्य एकता का अहसास करेंगे जिन्होंने ज़िद की और विभाजन कराया। यह एक स्वप्न लग सकता है, पर इसका साकार होना असंभव भी नहीं है।

(क) आपके विचार से भाषण का उपर्युक्त अंश किस अवसर का होगा ? आप ऐसा क्यों सोचते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषण का अवसर पहचानने के लिए समय, घटना और वक्ता की तत्कालीन स्थिति के संकेत खोजे जाते हैं।
- अनुमान का आधार गद्यांश की स्पष्ट सूचनाएँ होनी चाहिए।

चरण 1: शासन सँभालने का संकेत पहचानिए वक्ता कहता है कि हम अपने देश का शासन सँभाल रहे हैं। यह कथन विदेशी शासन से मुक्ति मिलने और स्वतंत्र भारत का शासन भारतीयों के हाथ में आने का संकेत है।

चरण 2: विभाजन के उल्लेख से प्रसंग जोड़िए देश के विभाजित होने और सीमा के पार नए शासन की स्थापना का उल्लेख भी स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय की ओर संकेत करता है। स्वतंत्रता-सेनानियों के बलिदान का स्मरण इस अवसर के अनुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष यह अंश भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति, अर्थात 15 अगस्त 1947 के अवसर का होगा, क्योंकि इसमें देश का शासन सँभालने, स्वतंत्रता के लिए किए गए बलिदानों और तत्कालीन विभाजन का उल्लेख है।

त्वरित सुझाव: अवसर बताते समय शासन सँभालने और विभाजन के दोनों पाठ-संकेतों को अपने कारण में जोड़िए।

17(ख). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इतिहास की इस अविस्मरणीय घड़ी में, जब हम अपने देश का शासन सँभाल रहे हैं, आइए, हम उन लोगों की सेवाओं और बलिदान को नतमस्तक होकर याद करें, जिनकी मेहनत और कुर्बानी से हमें आज का दिन नसीब हुआ। हम आधुनिक इतिहास के निर्माता महात्मा गाँधी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें, जिन्होंने परीक्षा के इस वर्षों में हमें प्रेरित और निर्देशित किया और जो वर्षों का बोझ अपने कंधों पर ढोने के बावजूद अपने रास्ते से वह काम अभी भी पूरा कर रहे हैं, जिसे हासिल करना अभी बाकी है। यह निस्संदेह उल्लास का दिन है; लेकिन एक विचार है जो इस घटना की पूर्णता में खटक रहा है। भारत को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया है; इसकी संस्कृति, परंपरा और सदियों का इतिहास एक रहा है। वह आज विभाजित हो चुका है और बहुत से लोग सीमा के उस पार खड़े हैं, जिन्हें इसी पार होना चाहिए था। आज वहाँ स्थापित होने जा रहे नए शासन को हम शुभकामनाएँ देते हैं और वे भी अपने नागरिकों की खुशहाली और समृद्धि के कार्य में सफल हों। आइए, हम उम्मीद और दुआ करें कि वह दिन भी आएगा जब वे भी भारत की अनिवार्य एकता का अहसास करेंगे जिन्होंने ज़िद की और विभाजन कराया। यह एक स्वप्न लग सकता है, पर इसका साकार होना असंभव भी नहीं है।

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए — '....बहुत से लोग सीमा के उस पार खड़े हैं, जिन्हें इसी पार होना चाहिए था।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने के लिए कथन को उसके पहले और बाद के विचारों से जोड़कर समझना चाहिए।
- यहाँ सीमा के दो पार देश के विभाजन से उत्पन्न राजनीतिक अलगाव को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: सीमा के पार का संदर्भ समझिए भारत के विभाजन से अनेक लोग नई सीमा के उस पार, नए बने देश में रह गए। पहले वे एक ही देश और उसके साझा इतिहास का हिस्सा थे।

चरण 2: इसी पार होने की भावना पहचानिए वक्ता भारत की संस्कृति, परंपरा और इतिहास को एक मानता है। इसलिए वह इन लोगों को अपने से अलग नहीं समझता और उनके अलग हो जाने पर पीड़ा व्यक्त करता है। यह कथन साझा राष्ट्रीय अपनत्व की भावना व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि विभाजन ने एक देश के लोगों को राजनीतिक सीमा से अलग कर दिया। वक्ता के अनुसार साझा इतिहास और संस्कृति से जुड़े ये लोग अखंड भारत का अंग बने रहने चाहिए थे।

त्वरित सुझाव: इस कथन को साझा संस्कृति और इतिहास वाले पिछले वाक्य से जोड़कर समझाइए; किसी समुदाय तक अर्थ सीमित न कीजिए।

17(ग). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इतिहास की इस अविस्मरणीय घड़ी में, जब हम अपने देश का शासन सँभाल रहे हैं, आइए, हम उन लोगों की सेवाओं और बलिदान को नतमस्तक होकर याद करें, जिनकी मेहनत और कुर्बानी से हमें आज का दिन नसीब हुआ। हम आधुनिक इतिहास के निर्माता महात्मा गाँधी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें, जिन्होंने परीक्षा के इस वर्षों में हमें प्रेरित और निर्देशित किया और जो वर्षों का बोझ अपने कंधों पर ढोने के बावजूद अपने रास्ते से वह काम अभी भी पूरा कर रहे हैं, जिसे हासिल करना अभी बाकी है। यह निस्संदेह उल्लास का दिन है; लेकिन एक विचार है जो इस घटना की पूर्णता में खटक रहा है। भारत को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया है; इसकी संस्कृति, परंपरा और सदियों का इतिहास एक रहा है। वह आज विभाजित हो चुका है और बहुत से लोग सीमा के उस पार खड़े हैं, जिन्हें इसी पार होना चाहिए था। आज वहाँ स्थापित होने जा रहे नए शासन को हम शुभकामनाएँ देते हैं और वे भी अपने नागरिकों की खुशहाली और समृद्धि के कार्य में सफल हों। आइए, हम उम्मीद और दुआ करें कि वह दिन भी आएगा जब वे भी भारत की अनिवार्य एकता का अहसास करेंगे जिन्होंने ज़िद की और विभाजन कराया। यह एक स्वप्न लग सकता है, पर इसका साकार होना असंभव भी नहीं है।

(ग) उल्लास के दिन भी कौन-सी बात खटक रही है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में उल्लास के साथ व्यक्त दुःख का कारण पहचानना इस प्रश्न का आधार है।
- क्या और क्यों पूछे जाने पर घटना तथा उसका कारण दोनों बताने चाहिए।

चरण 1: उल्लास के बीच खटकती बात खोजिए स्वतंत्रता मिलने और अपना शासन सँभालने का दिन आनंद का है, पर उसी समय भारत का विभाजन हुआ है। इसी विभाजन की बात वक्ता को खटक रही है।

चरण 2: पीड़ा का कारण स्पष्ट कीजिए वक्ता के अनुसार प्रकृति, संस्कृति, परंपरा और सदियों के इतिहास ने भारत को एक बनाया है। राजनीतिक विभाजन से इस एकता को चोट पहुँची है और अनेक अपने लोग सीमा के उस पार अलग हो गए हैं। इसलिए स्वतंत्रता का आनंद पूर्ण नहीं हो पा रहा।

चरण 3: निष्कर्ष उल्लास के दिन देश का विभाजन खटक रहा है, क्योंकि साझा संस्कृति, परंपरा और इतिहास से जुड़ा भारत बँट गया है तथा उसके अनेक लोग नई सीमा के कारण अलग हो गए हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल विभाजन न लिखिए; उसके कारण राष्ट्रीय एकता और अपने लोगों के अलगाव की पीड़ा भी बताइए।

17(घ). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इतिहास की इस अविस्मरणीय घड़ी में, जब हम अपने देश का शासन सँभाल रहे हैं, आइए, हम उन लोगों की सेवाओं और बलिदान को नतमस्तक होकर याद करें, जिनकी मेहनत और कुर्बानी से हमें आज का दिन नसीब हुआ। हम आधुनिक इतिहास के निर्माता महात्मा गाँधी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें, जिन्होंने परीक्षा के इस वर्षों में हमें प्रेरित और निर्देशित किया और जो वर्षों का बोझ अपने कंधों पर ढोने के बावजूद अपने रास्ते से वह काम अभी भी पूरा कर रहे हैं, जिसे हासिल करना अभी बाकी है। यह निस्संदेह उल्लास का दिन है; लेकिन एक विचार है जो इस घटना की पूर्णता में खटक रहा है। भारत को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया है; इसकी संस्कृति, परंपरा और सदियों का इतिहास एक रहा है। वह आज विभाजित हो चुका है और बहुत से लोग सीमा के उस पार खड़े हैं, जिन्हें इसी पार होना चाहिए था। आज वहाँ स्थापित होने जा रहे नए शासन को हम शुभकामनाएँ देते हैं और वे भी अपने नागरिकों की खुशहाली और समृद्धि के कार्य में सफल हों। आइए, हम उम्मीद और दुआ करें कि वह दिन भी आएगा जब वे भी भारत की अनिवार्य एकता का अहसास करेंगे जिन्होंने ज़िद की और विभाजन कराया। यह एक स्वप्न लग सकता है, पर इसका साकार होना असंभव भी नहीं है।

(घ) किस स्वप्न के साकार होने की बात है ? आपके मत में ऐसा कैसे हो सकता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वप्न का अर्थ उस आशा से स्पष्ट होता है जिसे वक्ता पिछले वाक्य में व्यक्त करता है।
- अपने मत का उत्तर भी गद्यांश के मूल विचार से जुड़ा होना चाहिए।

चरण 1: वक्ता का स्वप्न पहचानिए वक्ता आशा करता है कि विभाजन कराने वाले भी एक दिन भारत की अनिवार्य एकता का अनुभव करेंगे। यह बँटे हुए लोगों में फिर एकता की चेतना जागने और भारत के पुनः एक होने का स्वप्न है।

चरण 2: साकार होने का मार्ग बताइए मेरे मत में साझा संस्कृति और इतिहास को समझने, परस्पर अविश्वास तथा कटुता दूर करने और संवाद बढ़ाने से एकता का भाव जाग सकता है। यह स्वप्न पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और लोगों की स्वैच्छिक सहमति से ही साकार हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वप्न भारत की एकता को फिर स्वीकार करने और पुनः एक होने का है। साझा विरासत का बोध, आपसी विश्वास तथा स्वैच्छिक सहयोग इसके साकार होने का मार्ग बन सकते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश का स्वप्न स्पष्ट कीजिए, फिर अपने मत में सद्भाव और संवाद जैसे उसके अनुरूप उपाय लिखिए।

17(ङ). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इतिहास की इस अविस्मरणीय घड़ी में, जब हम अपने देश का शासन सँभाल रहे हैं, आइए, हम उन लोगों की सेवाओं और बलिदान को नतमस्तक होकर याद करें, जिनकी मेहनत और कुर्बानी से हमें आज का दिन नसीब हुआ। हम आधुनिक इतिहास के निर्माता महात्मा गाँधी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें, जिन्होंने परीक्षा के इस वर्षों में हमें प्रेरित और निर्देशित किया और जो वर्षों का बोझ अपने कंधों पर ढोने के बावजूद अपने रास्ते से वह काम अभी भी पूरा कर रहे हैं, जिसे हासिल करना अभी बाकी है। यह निस्संदेह उल्लास का दिन है; लेकिन एक विचार है जो इस घटना की पूर्णता में खटक रहा है। भारत को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया है; इसकी संस्कृति, परंपरा और सदियों का इतिहास एक रहा है। वह आज विभाजित हो चुका है और बहुत से लोग सीमा के उस पार खड़े हैं, जिन्हें इसी पार होना चाहिए था। आज वहाँ स्थापित होने जा रहे नए शासन को हम शुभकामनाएँ देते हैं और वे भी अपने नागरिकों की खुशहाली और समृद्धि के कार्य में सफल हों। आइए, हम उम्मीद और दुआ करें कि वह दिन भी आएगा जब वे भी भारत की अनिवार्य एकता का अहसास करेंगे जिन्होंने ज़िद की और विभाजन कराया। यह एक स्वप्न लग सकता है, पर इसका साकार होना असंभव भी नहीं है।

(ङ) महात्मा गाँधी के प्रति कृतज्ञता क्यों व्यक्त की गई है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कृतज्ञता किसी व्यक्ति के योगदान और उपकार को स्वीकार करने की भावना है।
- इस प्रश्न में गाँधीजी के योगदान को केवल दिए गए गद्यांश के आधार पर स्पष्ट करना है।

चरण 1: संघर्ष के वर्षों का योगदान पहचानिए गद्यांश बताता है कि महात्मा गाँधी ने परीक्षा के कठिन वर्षों में देशवासियों को प्रेरित और निर्देशित किया। स्वतंत्रता के लिए चले संघर्ष में उनका मार्गदर्शन अत्यंत महत्त्वपूर्ण था।

चरण 2: निरंतर सेवा की भावना समझिए गाँधीजी वृद्धावस्था के बावजूद शेष अधूरे कार्य को पूरा करने में लगे हुए थे। वक्ता उनके निरंतर प्रयत्नों को स्वीकार करता है और उन्हें आधुनिक इतिहास का निर्माता कहकर सम्मान देता है।

चरण 3: निष्कर्ष गाँधीजी के प्रति कृतज्ञता इसलिए व्यक्त की गई है कि उन्होंने कठिन संघर्ष के वर्षों में देश को प्रेरणा और दिशा दी तथा वृद्धावस्था में भी अधूरे राष्ट्रीय कार्य को पूरा करने में जुटे रहे।

त्वरित सुझाव: कारण में गाँधीजी की प्रेरणा, मार्गदर्शन और वृद्धावस्था में भी जारी सेवा के पाठ-संकेतों को शामिल कीजिए।

18(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन,
मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसा बीता जीवन।
इस दुनिया की रीति यही - सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बात सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ !
पग-पग पर शोर मचाने से, मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षणभर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता !
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों में मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम-से-कम मत बोओ !

(क) फूल बोने और काँटे न बोने का क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में फूल और काँटे मानव-व्यवहार के प्रतीक हैं; उनका आशय संदर्भ के आधार पर स्पष्ट करना चाहिए।
- कवि सकारात्मक कार्य करने और दूसरों को कष्ट पहुँचाने वाले कार्यों से बचने की प्रेरणा देता है।

चरण 1: फूल के प्रतीक को समझें फूल सुंदरता, प्रसन्नता और सुगंध देते हैं। इसलिए फूल बोने से तात्पर्य दूसरों के जीवन में सुख, प्रेम और सद्भाव बढ़ाने तथा उनका भला करने से है।

चरण 2: काँटे के प्रतीक को समझें काँटे चुभकर पीड़ा देते हैं। काँटे न बोने का आशय है कि यदि किसी का भला करना संभव न हो, तो कम-से-कम उसे दुख न पहुँचाएँ और उसके मार्ग में बाधाएँ न उत्पन्न करें। दोनों प्रतीक मिलकर मानव-कल्याण का संदेश देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष फूल बोने का अभिप्राय सुख, प्रेम और भलाई फैलाना है; काँटे न बोने का अभिप्राय दूसरों को कष्ट न देना और उनका अहित न करना है।

त्वरित सुझाव: फूल और काँटे का केवल प्राकृतिक अर्थ न लिखें; उन्हें क्रमशः भलाई और अहित से जोड़कर स्पष्ट करें।

18(ख). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन,
मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसा बीता जीवन।
इस दुनिया की रीति यही - सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बात सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ !
पग-पग पर शोर मचाने से, मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षणभर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता !
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों में मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम-से-कम मत बोओ !

(ख) कवि किसे चेतन मानता है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के अनुसार चेतना का संबंध विवेक और सजगता से है, केवल जागते रहने से नहीं।
- उत्तर का आधार पंक्ति है: "सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका वह है चेतन !

चरण 1: चेतन व्यक्ति की पहचान करें कवि उस व्यक्ति को चेतन मानता है जो सुख-सुविधाओं के बीच रहते हुए भी अहंकार और प्रमाद में नहीं डूबता। वह सुख के आकर्षण में अपनी सजगता नहीं खोता।

चरण 2: चेतन कहने का कारण समझें सुख का नशा मनुष्य को असावधान और आत्मकेंद्रित बना सकता है। जो इस प्रभाव से बचकर विवेक बनाए रखता है और जीवन के प्रति जागरूक रहता है, वही सच्चे अर्थ में चेतन है। यहाँ जागना मानसिक और नैतिक सजगता का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सुख के मद और अहंकार में भी विवेकपूर्ण तथा सजग रहने वाले को चेतन मानता है, क्योंकि वह सुख के नशे में अपनी चेतना नहीं खोता।

त्वरित सुझाव: चेतन की पहचान बताते समय सुख में सजग रहने की बात और उसका कारण, दोनों अवश्य लिखें।

18(ग). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन,
मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसा बीता जीवन।
इस दुनिया की रीति यही - सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बात सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ !
पग-पग पर शोर मचाने से, मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षणभर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता !
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों में मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम-से-कम मत बोओ !

(ग) किस पंक्ति का आशय है — विश्वासपूर्वक आगे न बढ़ने वाले को जीना नहीं चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दिए गए आशय से मेल खाने वाली पंक्ति पहचानने के लिए उसके प्रमुख संकेतों को काव्यांश से मिलाना चाहिए।
- यहाँ विश्वासपूर्वक आगे बढ़ने और निष्क्रिय जीवन के संकेत निर्णायक हैं।

चरण 1: विश्वासपूर्वक बढ़ने का संकेत खोजें प्रश्न का पहला संकेत विश्वास के सहारे आगे बढ़ना है। काव्यांश में "यदि बढ़ न सको विश्वासों पर इन्हीं शब्दों में इस विचार को व्यक्त करता है।

चरण 2: निष्क्रिय जीवन के संकेत को समझें "साँसों में मुरदे मत ढोओ का भाव है कि विश्वास और उत्साह के बिना जीवन को मृतवत् न बनाएँ। यह निष्क्रियता छोड़कर सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा है। इसलिए प्रश्न के दोनों संकेत इसी एक पंक्ति से मेल खाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त पंक्ति है: "यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों में मुरदे मत ढोओ !

त्वरित सुझाव: पंक्ति पूछे जाने पर भावार्थ के साथ निष्कर्ष में काव्यांश की पूरी संबंधित पंक्ति ठीक-ठीक लिखें।

18(घ). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन,
मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसा बीता जीवन।
इस दुनिया की रीति यही - सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बात सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ !
पग-पग पर शोर मचाने से, मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षणभर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता !
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों में मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम-से-कम मत बोओ !

(घ) सुख की मदिरा क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि सुख को मदिरा कहकर दोनों के नशीले प्रभाव की समानता व्यक्त करता है।
- "अभिमानी और "जाग सका शब्द बताते हैं कि यहाँ अहंकार तथा चेतना खोने का भाव प्रमुख है।

चरण 1: मदिरा के प्रभाव को समझें मदिरा के नशे में व्यक्ति का विवेक और सजगता कम हो सकती है। वह वास्तविक स्थितियों को ठीक से समझने तथा उचित-अनुचित में अंतर करने की शक्ति खो सकता है।

चरण 2: सुख के प्रभाव से तुलना करें अत्यधिक सुख-सुविधाओं का मद भी मनुष्य को अहंकारी और असावधान बना देता है। वह अपने आसपास के दुख और अपने दायित्वों के प्रति उदासीन हो सकता है। इसी सम्मोहित तथा अचेत करने वाले प्रभाव के कारण कवि ने सुख को मदिरा कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष सुख को मदिरा इसलिए कहा गया है कि उसके नशे में मनुष्य अभिमानी होकर अपना विवेक और सजगता खो सकता है, जैसे मदिरा के प्रभाव में चेतना मंद पड़ जाती है।

त्वरित सुझाव: तुलना का आधार स्पष्ट लिखें: मदिरा और सुख का मद, दोनों मनुष्य की सजगता तथा विवेक को प्रभावित करते हैं।

18(ङ). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन,
मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसा बीता जीवन।
इस दुनिया की रीति यही - सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बात सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ !
पग-पग पर शोर मचाने से, मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षणभर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता !
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों में मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम-से-कम मत बोओ !

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए :

"हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय बताते समय उसके प्रतीकात्मक अर्थ को कविता के समग्र संदेश से जोड़ना चाहिए।
- सपने भविष्य की आशाओं के तथा चाँदनी और चंदन शीतलता, सांत्वना और मानसिक शांति के प्रतीक हैं।

चरण 1: सपनों पर विश्वास का अर्थ स्पष्ट करें कवि कहता है कि मनुष्य अपनी आशाओं और सुंदर भविष्य के सपनों पर विश्वास बनाए रखे। अतीत के कष्टों को याद करके निराश होने के स्थान पर उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा अपने सपनों से लेनी चाहिए।

चरण 2: चाँदनी के चंदन का भाव समझें चाँदनी की शीतलता और चंदन की शांति जीवन के दुखों की जलन को कम करने का संकेत देती हैं। आशा और विश्वास को अपनाकर मनुष्य अपने अशांत मन को सांत्वना दे सकता है और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि बनाए रख सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि अपने सपनों और उज्ज्वल भविष्य पर भरोसा रखो तथा आशा की शीतलता से बीते दुखों की जलन शांत करके उत्साहपूर्वक जीवन में आगे बढ़ो।

त्वरित सुझाव: आशय में दोनों अंश समझाएँ: सपनों पर भरोसा और चाँदनी-चंदन से मिलने वाली आशा तथा मानसिक शांति।

19. अपने विदेशी पत्र-मित्र को पत्र लिखकर किसी भारतीय त्योहार के विशेष आकर्षक बिन्दुओं को समझाते हुए उसे भारत आने का निमंत्रण दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विदेशी पत्र-मित्र को लिखे जाने वाले पत्र की भाषा आत्मीय, सहज और स्पष्ट होनी चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संबोधन, मुख्य विषय, निमंत्रण तथा आत्मीय समापन देना चाहिए।
- त्योहार से अपरिचित मित्र को उसके विशेष आकर्षण समझाकर भारत आने का स्पष्ट निमंत्रण देना आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय करें यह मित्र को लिखा जाने वाला व्यक्तिगत पत्र है। ऊपर अपना पता और दिनांक दें। प्रिय मित्र के संबोधन के बाद कुशलक्षेम पूछें। मुख्य भाग में किसी एक भारतीय त्योहार का परिचय, उसकी तैयारियाँ और आकर्षण बताएँ। अंत में आने का आग्रह तथा उत्तर की अपेक्षा व्यक्त करें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ यहाँ दीपावली का चयन किया गया है। दीपों की सजावट, रंगोली, घरों की सफाई, पूजा, मिठाइयों का आदान-प्रदान और पारिवारिक मेल-मिलाप इसके आकर्षण हैं। विदेशी मित्र को केवल गतिविधियाँ गिनाने के स्थान पर उनके सांस्कृतिक भाव भी समझाएँ। उसे अपने घर ठहरने का निमंत्रण देकर पत्र को आत्मीय और व्यावहारिक बनाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 25, अशोक नगर
नई दिल्ली
15 सितंबर, 2007
प्रिय मित्र जॉन,
सप्रेम नमस्कार।
मैं यहाँ कुशल हूँ और तुम्हारी कुशलता की आशा करता हूँ। पिछले पत्र में तुमने भारतीय त्योहारों को निकट से देखने की इच्छा व्यक्त की थी। मैं तुम्हें आगामी दीपावली पर भारत आने का हार्दिक निमंत्रण देता हूँ।
दीपावली हमारे प्रमुख त्योहारों में से एक है। इसे प्रकाश का पर्व कहा जाता है। यह अंधकार पर प्रकाश तथा बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देता है। त्योहार से पहले घरों की सफाई होती है और बाजार रंग-बिरंगी सजावट से जगमगा उठते हैं। घरों के द्वारों पर रंगोली बनाई जाती है तथा संध्या को दीपों की पंक्तियाँ सजाई जाती हैं। जब एक साथ असंख्य दीप जलते हैं, तो दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है।
हम परिवार के साथ लक्ष्मी-गणेश का पूजन करते हैं। मित्रों और पड़ोसियों से मिलकर मिठाइयाँ बाँटते हैं तथा एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। इस प्रकार त्योहार हमें आपसी स्नेह बढ़ाने का अवसर भी देता है। तुम्हें विशेष रूप से रंगोली बनाना, मिट्टी के दीप सजाना और भारतीय मिठाइयों का स्वाद लेना अच्छा लगेगा।
तुम त्योहार से कुछ दिन पहले आ जाना और हमारे घर ही ठहरना। मेरे माता-पिता भी तुमसे मिलकर प्रसन्न होंगे। हम साथ मिलकर तैयारी करेंगे और तुम्हें भारतीय पारिवारिक जीवन को समझने का अवसर मिलेगा। अपने आने की योजना शीघ्र लिखना, ताकि मैं तुम्हें हवाई अड्डे पर लेने आ सकूँ।
तुम्हारे परिवार को मेरा स्नेह और शुभकामनाएँ।
तुम्हारा मित्र
अमित

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में दीपावली के दृश्यात्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक आकर्षण स्पष्ट करते हुए विदेशी मित्र को भारत आने तथा घर पर ठहरने का आत्मीय निमंत्रण दिया गया है।

त्वरित सुझाव: विदेशी मित्र के लिए त्योहार की गतिविधियों का अर्थ भी समझाएँ और अंत में आने व ठहरने का स्पष्ट निमंत्रण अवश्य दें।

अथवा

19. (अथवा) 'राजस्थान पत्रिका' जयपुर के संपादक को पत्र लिखकर सती-प्रथा के अमानवीय और असामाजिक पक्ष को उद्घाटित कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र किसी सार्वजनिक समस्या पर समाज का ध्यान आकर्षित करता है। इसकी भाषा शिष्ट, स्पष्ट और तर्कपूर्ण होनी चाहिए।
- सती-प्रथा का विरोध स्त्री के जीवन, गरिमा, स्वतंत्र इच्छा और समानता के आधार पर किया जाना चाहिए। विधवा को संरक्षण और सम्मान देना समाज का दायित्व है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय निर्धारित करना प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर संपादक का पद, समाचार-पत्र का नाम और नगर लिखेंगे। विषय में सती-प्रथा की अमानवीयता तथा उसके उन्मूलन की आवश्यकता स्पष्ट करेंगे। संबोधन के बाद समस्या, उसके सामाजिक दुष्परिणाम और सुधार के उपाय प्रस्तुत करेंगे। अंत में प्रकाशन का अनुरोध और प्रेषक का नाम आएगा।

चरण 2: विषय-वस्तु की रूपरेखा पति की मृत्यु से पत्नी के जीवन का मूल्य समाप्त नहीं होता। स्त्री को सामाजिक दबाव, भय या अंधविश्वास के कारण मृत्यु की ओर धकेलना करुणा और न्याय के विरुद्ध है। सती का महिमामंडन स्त्री की स्वतंत्र पहचान नकारता है और पीछे छूटे बच्चों तथा परिवार की पीड़ा बढ़ाता है। समाधान में जनजागरण, स्त्री-शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, विधवाओं का सम्मान तथा संकटग्रस्त स्त्रियों की रक्षा शामिल करेंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 25, आदर्श नगर

जयपुर

15 मार्च, 2007

सेवा में,

संपादक महोदय,

राजस्थान पत्रिका,

जयपुर।

विषय : सती-प्रथा के अमानवीय और असामाजिक स्वरूप के संबंध में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं सती-प्रथा जैसी अमानवीय कुरीति के प्रति समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसके साथ जलने के लिए प्रेरित करना अथवा विवश करना मानवता पर कलंक है। स्त्री का जीवन उसका अपना है; पति की मृत्यु से उसके जीने का अधिकार समाप्त नहीं हो जाता।

सती-प्रथा का महिमामंडन स्त्री को स्वतंत्र व्यक्ति मानने के बजाय पति की छाया मानने की मानसिकता को बढ़ावा देता है। शोकग्रस्त महिला पर परिवार, समाज अथवा धार्मिक विश्वासों का दबाव डालना उसकी स्वतंत्र इच्छा का सम्मान नहीं है। ऐसी घटना बच्चों को माँ के स्नेह से भी वंचित करती है और समाज में हिंसा तथा अंधविश्वास को प्रतिष्ठा देती है। किसी प्रथा का पुराना होना उसके उचित होने का प्रमाण नहीं है।

आवश्यक है कि शिक्षित नागरिक, सामाजिक संस्थाएँ और समाचार-पत्र इस कुरीति के विरुद्ध जनजागरण करें। विधवाओं को शिक्षा, रोजगार, सुरक्षा और सम्मानपूर्ण जीवन के अवसर मिलें। परिवार उन्हें बोझ समझने के बजाय भावनात्मक सहारा दे। संकट में पड़ी महिलाओं की समय पर रक्षा की जाए और सती का महिमामंडन करने वाले आयोजनों को सामाजिक समर्थन न मिले।

कृपया इस विषय पर लेख तथा संपादकीय प्रकाशित करके जनमत जाग्रत करें। स्त्री के जीवन और गरिमा की रक्षा ही सभ्य समाज की पहचान है।

धन्यवाद।

भवदीय,

अजय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष यह पत्र संपादक के माध्यम से सती-प्रथा की अमानवीयता, स्त्री-विरोधी सामाजिक सोच और उसके निवारण के उपायों को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में केवल निंदा न करें; समस्या के सामाजिक प्रभाव और कम-से-कम दो व्यावहारिक सुधार भी लिखें।

20. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(क) पर्यावरण : हमारा रक्षा-कवच

(ख) बाढ़ की विनाशलीला और उसके बाद

(ग) आतंकवाद — समस्या और समाधान

(घ) लोकतंत्र और चुनाव

(ङ) घर-परिवार में नारी की भूमिका [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में दिए गए विषय का क्रमबद्ध, संतुलित और स्वतंत्र विवेचन होता है। शीर्षक, भूमिका, मुख्य विवेचन और उपसंहार उसके प्रमुख अंग हैं।
- लगभग 300 शब्दों की सीमा में उदाहरणों और तर्कों का चयन आवश्यक है। विषय के दोनों पक्षों तथा व्यावहारिक उपायों को जोड़ने से विचार स्पष्ट होते हैं।

चरण 1: निबंध का स्वरूप और विषय-योजना प्रश्न में परीक्षा के लिए किसी एक विषय का चयन करना है। अभ्यास के लिए नीचे पाँचों विषयों के स्वतंत्र आदर्श निबंध दिए गए हैं। प्रत्येक निबंध का क्रम भूमिका, विषय-विस्तार, समस्या या चुनौती, समाधान और उपसंहार है। परीक्षा में केवल चुने हुए एक विषय का लगभग 300 शब्दों में सुसंगत उत्तर लिखें।

चरण 2: लेखन में संतुलन और संगति पर्यावरण में संरक्षण, बाढ़ में विनाश के साथ राहत और पुनर्वास, आतंकवाद में सुरक्षा के साथ सामाजिक एकता, लोकतंत्र में चुनाव के साथ नागरिक जिम्मेदारी तथा नारी-विषय में योगदान के साथ समान अधिकार प्रमुख बिंदु रहेंगे। छोटे अनुच्छेदों में विचारों का क्रम बनाएँ। अप्रमाणित आँकड़े, अनावश्यक उद्धरण और विषय से बाहर की बातें न जोड़ें।

चरण 3: (क) आदर्श निबंध : पर्यावरण : हमारा रक्षा-कवच पर्यावरण : हमारा रक्षा-कवच

हमारे चारों ओर फैली हवा, जल, मिट्टी, वनस्पतियाँ और जीव-जंतु मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। यह केवल हमारे रहने का स्थान नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा करने वाला प्राकृतिक कवच है। शुद्ध वायु हमें साँस देती है, जल प्यास बुझाता है और मिट्टी भोजन उपलब्ध कराती है। इसलिए पर्यावरण का संतुलन मनुष्य सहित सभी जीवों के अस्तित्व की पहली शर्त है।

प्रकृति के प्रत्येक घटक की अपनी भूमिका है। पेड़ वायु को स्वच्छ बनाने, छाया देने तथा मिट्टी को कटाव से बचाने में सहायक हैं। वन अनेक जीवों को आश्रय देते हैं। नदियाँ और तालाब खेती तथा दैनिक जीवन की आवश्यकताएँ पूरी करते हैं। विविध जीव प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में योगदान देते हैं। इस प्रकार पर्यावरण हमें पोषण, संरक्षण और स्वस्थ जीवन की परिस्थितियाँ प्रदान करता है।

आज मनुष्य अपने ही रक्षा-कवच को नुकसान पहुँचा रहा है। वनों की कटाई, उद्योगों का अनुपचारित कचरा, वाहनों का धुआँ और प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग गंभीर समस्याएँ हैं। सुविधा की अंधी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। दूषित पानी, प्रदूषित हवा और घटती हरियाली का दुष्परिणाम अंततः मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। प्रकृति की उपेक्षा करके विकास स्थायी नहीं हो सकता।

पर्यावरण की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। पेड़ लगाने के साथ उनकी देखभाल भी करनी होगी। वर्षाजल का संचय, पानी और बिजली की बचत, कचरे का पृथक्करण तथा सार्वजनिक परिवहन का उपयोग उपयोगी कदम हैं। उद्योगों को अपशिष्ट का उपचार करना चाहिए। विद्यालयों में पर्यावरण के प्रति व्यवहारिक जागरूकता विकसित की जानी चाहिए। सरकार, समाज और प्रत्येक नागरिक का सहयोग इस कार्य को प्रभावी बनाएगा।

धरती हमें विरासत में मिली है, पर आने वाली पीढ़ियों का भी इस पर अधिकार है। अपनी आवश्यकताओं को संयमित करके और प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनकर ही हम यह विरासत सुरक्षित रख सकते हैं। पर्यावरण बचाना वास्तव में अपने भविष्य को बचाना है।

चरण 4: (ख) आदर्श निबंध : बाढ़ की विनाशलीला और उसके बाद बाढ़ की विनाशलीला और उसके बाद

जल जीवन का आधार है, लेकिन जब वह मर्यादा तोड़कर बस्तियों और खेतों में फैल जाता है, तो भीषण संकट बन जाता है। अत्यधिक वर्षा और नदियों का उफान बाढ़ ला सकते हैं। जलनिकासी में बाधा, नदियों के किनारे अतिक्रमण और वनों की कटाई इस संकट को बढ़ा देते हैं। देखते ही देखते शांत भूभाग जलराशि में बदल जाता है।

बाढ़ की विनाशलीला अत्यंत हृदयविदारक होती है। कच्चे मकान ढह जाते हैं, सड़कें टूटती हैं और गाँवों का संपर्क कट जाता है। खेतों में खड़ी फसलें डूब जाती हैं। पशु बह जाते हैं और अनेक परिवार अपनी जीवनभर की कमाई खो देते हैं। बच्चे, वृद्ध और बीमार व्यक्ति विशेष रूप से असहाय हो जाते हैं। चारों ओर पानी होने पर भी पीने का स्वच्छ जल दुर्लभ हो जाता है।

ऐसे समय सबसे पहली आवश्यकता लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने की होती है। बचाव-दल, प्रशासन और स्थानीय नागरिकों के सहयोग से नावों तथा उपलब्ध साधनों द्वारा सहायता पहुँचाई जानी चाहिए। राहत-शिविरों में भोजन, स्वच्छ पानी, दवाइयों और शौचालयों का प्रबंध जरूरी है। महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा तथा परिवार से बिछड़े लोगों की खोज पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सहायता का वितरण निष्पक्ष और व्यवस्थित हो।

पानी उतरने के बाद भी कठिनाइयाँ समाप्त नहीं होतीं। गंदगी और दूषित जल से रोग फैलने का खतरा रहता है। घरों की सफाई, जलस्रोतों की जाँच और चिकित्सा सेवाएँ आवश्यक हो जाती हैं। किसानों को बीज, पशुपालकों को सहायता और बेघर परिवारों को आवास चाहिए। बच्चों की पढ़ाई फिर शुरू कराना तथा लोगों की आजीविका बहाल करना पुनर्वास के महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

भविष्य में नुकसान घटाने के लिए समय पर चेतावनी, सुरक्षित आश्रय, बेहतर जलनिकासी और नदी-क्षेत्रों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। आपदा की तैयारी केवल प्रशासन का काम नहीं, सामुदायिक जिम्मेदारी भी है। संवेदनशील सहयोग और योजनाबद्ध पुनर्वास ही बाढ़-पीड़ित जीवन में फिर से आशा जगा सकते हैं।

चरण 5: (ग) आदर्श निबंध : आतंकवाद — समस्या और समाधान आतंकवाद : समस्या और समाधान

आतंकवाद भय और हिंसा के माध्यम से अपने उद्देश्य थोपने की प्रवृत्ति है। निर्दोष लोगों पर हमले करके आतंकवादी समाज में असुरक्षा फैलाना चाहते हैं। यह मानवता, शांति और लोकतांत्रिक जीवन के लिए गंभीर चुनौती है। किसी विचार, धर्म या राजनीतिक लक्ष्य के नाम पर निर्दोष व्यक्तियों की हत्या उचित नहीं ठहराई जा सकती। हिंसा समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं देती।

आतंकवाद का प्रभाव केवल घटनास्थल तक सीमित नहीं रहता। परिवार अपने प्रियजनों को खो देते हैं और घायल व्यक्ति लंबे समय तक पीड़ा सहते हैं। भय से व्यापार, पर्यटन और सामान्य जनजीवन प्रभावित होते हैं। सामाजिक अविश्वास बढ़ता है और विकास के लिए आवश्यक संसाधन सुरक्षा पर खर्च होते हैं। बच्चों के मन पर भी असुरक्षा की गहरी छाप पड़ती है।

इस समस्या के पीछे कट्टरता, घृणा फैलाने वाला प्रचार, संगठित हिंसक समूह और बाहरी सहयोग जैसे अनेक कारण हो सकते हैं। युवाओं की निराशा अथवा अलगाव का लाभ उठाकर उन्हें भटकाया जा सकता है। फिर भी गरीबी या असंतोष को हिंसा का औचित्य नहीं माना जा सकता। किसी पूरे समुदाय को दोषी ठहराना भी अन्यायपूर्ण है और इससे विभाजन बढ़ता है।

समाधान के लिए सुरक्षा और सामाजिक विश्वास दोनों आवश्यक हैं। खुफिया सूचनाओं का समन्वय, संवेदनशील स्थलों की सुरक्षा और हिंसक संगठनों के आर्थिक स्रोतों पर रोक महत्त्वपूर्ण हैं। जाँच निष्पक्ष हो तथा दोषियों पर न्यायपूर्ण कार्रवाई हो। देशों के बीच सहयोग से सीमा-पार सहायता और अपराध-जाल पर नियंत्रण संभव है। नागरिकों को अफवाहें फैलाने से बचना और संदिग्ध गतिविधियों की सूचना जिम्मेदारी से देनी चाहिए।

दीर्घकालीन स्तर पर शिक्षा, रोजगार, संवाद और समान अवसरों की बड़ी भूमिका है। युवाओं में विवेक, सहिष्णुता और लोकतांत्रिक तरीकों से मतभेद व्यक्त करने की क्षमता विकसित करनी होगी। मीडिया को सनसनी के स्थान पर प्रमाणित सूचना देनी चाहिए। आतंकवाद से संघर्ष करते समय नागरिक अधिकारों और मानवीय गरिमा की रक्षा भी जरूरी है। सजग सुरक्षा-व्यवस्था और एकजुट समाज मिलकर भय पर विजय पा सकते हैं।

चरण 6: (घ) आदर्श निबंध : लोकतंत्र और चुनाव लोकतंत्र और चुनाव

लोकतंत्र में शासन की शक्ति जनता से प्राप्त होती है। चुनाव वह माध्यम है जिसके द्वारा नागरिक अपने प्रतिनिधि चुनते हैं और शासन की दिशा को प्रभावित करते हैं। यह सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण का अवसर देता है। नियमित, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण आधार हैं। मतपत्र अथवा मतदान का अन्य निर्धारित माध्यम सामान्य नागरिक को सार्वजनिक निर्णयों से जोड़ता है।

चुनाव जनता और प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदायित्व का संबंध स्थापित करता है। जनप्रतिनिधियों को अपने कार्यों का हिसाब देना पड़ता है। मतदाता उनके वादों और उपलब्धियों की तुलना कर सकते हैं। विपक्ष भी सरकार की नीतियों पर प्रश्न उठाता है और विकल्प प्रस्तुत

करता है। इस प्रतिस्पर्धा से जनता की समस्याएँ सामने आती हैं तथा नीतियों पर सार्वजनिक चर्चा का अवसर मिलता है।

लेकिन चुनाव तभी सार्थक हैं जब मतदाता स्वतंत्र होकर निर्णय ले सके। धनबल, बाहुबल, धमकी, झूठा प्रचार और जाति-धर्म के नाम पर घृणा लोकतांत्रिक भावना को कमजोर करते हैं। यदि लोग लालच या भय में मतदान करें, तो योग्य प्रतिनिधि चुनने का उद्देश्य पीछे रह जाता है। मतदान के प्रति उदासीनता भी जनभागीदारी को सीमित करती है। लोकतंत्र की गुणवत्ता नागरिकों की सजगता पर निर्भर करती है।

सुधार के लिए चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्ष निगरानी आवश्यक है। प्रत्याशियों के काम, विचार और सार्वजनिक आचरण की जानकारी मतदाताओं तक पहुँचनी चाहिए। राजनीतिक दलों को वास्तविक जनसमस्याओं पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने चाहिए। नागरिकों को अपुष्ट संदेशों पर विश्वास करने के बजाय तथ्यों की जाँच करनी चाहिए। शिक्षा और जनजागरण से मतदान का महत्त्व समझाया जा सकता है। प्रत्येक पात्र मतदाता का मत समान महत्त्व रखता है।

लोकतंत्र केवल मतदान के दिन तक सीमित नहीं होता। चुने गए प्रतिनिधियों से प्रश्न पूछना, सार्वजनिक कार्यों की निगरानी करना और शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात रखना भी नागरिक कर्तव्य हैं। चुनाव हमें अधिकार के साथ जिम्मेदारी भी देता है। विवेकपूर्ण मतदान और निरंतर जनभागीदारी से ही लोकतंत्र जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप बन सकता है।

चरण 7: (ङ) आदर्श निबंध : घर-परिवार में नारी की भूमिका घर-परिवार में नारी की भूमिका

परिवार समाज की पहली इकाई है और नारी उसके निर्माण तथा विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। माँ, बेटी, बहन, पत्नी अथवा किसी अन्य संबंध में वह स्नेह, सहयोग और अनुभव से पारिवारिक जीवन को समृद्ध करती है। किंतु उसका महत्त्व केवल संबंधों से निर्धारित नहीं होता। वह अपनी इच्छाओं, योग्यताओं और स्वतंत्र पहचान वाला संपूर्ण व्यक्ति भी है।

परिवार में बच्चों के पालन-पोषण और संस्कारों के विकास में महिलाओं की भूमिका प्रायः बड़ी होती है। वे बच्चों को भाषा, संवेदनशीलता, अनुशासन और व्यवहार की सीख देती हैं। वृद्ध तथा बीमार सदस्यों की देखभाल और संबंधों में संवाद बनाए रखने में भी उनका योगदान रहता है। घर सँभालने का श्रम अनेक बार दिखाई नहीं देता, फिर भी दैनिक जीवन सुचारु बनता है।

आज महिलाएँ शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय और विभिन्न पेशों के माध्यम से परिवार की आर्थिक शक्ति भी बढ़ा रही हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता उन्हें निर्णय लेने का आत्मविश्वास देती है। शिक्षित महिला बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य और भविष्य संबंधी निर्णयों में महत्त्वपूर्ण सहयोग कर सकती है। अपनी प्रतिभा विकसित करके वह परिवार के साथ समाज की उन्नति में भी भागीदार बनती है।

फिर भी अनेक घरों में महिलाओं से घरेलू और बाहरी दोनों जिम्मेदारियाँ अकेले निभाने की अपेक्षा की जाती है। उनके श्रम को स्वाभाविक कर्तव्य मानकर उसकी उपेक्षा होती है। कभी उनकी शिक्षा, रोजगार अथवा निर्णय की स्वतंत्रता सीमित कर दी जाती है। त्याग की प्रशंसा के नाम पर किसी व्यक्ति की इच्छाओं और स्वास्थ्य को लगातार अनदेखा नहीं करना चाहिए।

स्वस्थ परिवार में काम और जिम्मेदारियाँ सभी सदस्य बाँटते हैं। पुरुषों को घरेलू कार्य तथा बच्चों की देखभाल में बराबरी से भाग लेना चाहिए। बेटियों और बेटों को समान शिक्षा, सम्मान और अवसर मिलें। पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की आवाज सुनी जाए। नारी को सम्मान देना केवल उसकी उपयोगिता स्वीकार करना नहीं, उसकी गरिमा और स्वतंत्रता को मानना है। समानता तथा सहयोग से ही सुखी परिवार बनता है।

चरण 8: निष्कर्ष किसी एक विषय पर स्पष्ट भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार सहित निबंध लिखना है। ऊपर प्रत्येक विकल्प का स्वतंत्र आदर्श उत्तर प्रस्तुत है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय के चार मुख्य बिंदु चुनें; फिर भूमिका और उपसंहार को छोटा रखकर प्रत्येक बिंदु एक अलग अनुच्छेद में समझाएँ।